ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-23 मार्च-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ‘8.00

परमात्म ज्ञान से ही होगा जीवन में नयी चेतना का संचार

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए द्रौपदी मुरमू। मंचासीन हैं गुलाब कोठारी, दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी, श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धाराम तथा लोकेश मुनी।

शांतिवन। मात्र छः वर्षों के ईश्वरीय ज्ञान ने ही मुझे जीवन का सही परिचय कराया और लौकिक परिवार में आयी त्रासदी ने मुझे अलौकिक परिवार का सदस्य बना दिया। ऐसा कहना था झारखण्ड की राज्यपाल द्रौपदी मुरमू का, जिन्होंने यह बात दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में कही। अत्यधिक भावनाओं से ओतप्रोत मुरमू जी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान को इस जीवन परिवर्तन के लिए धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा कि समाज सेवा से जुड़कर मुझे मेरे जीवन का सच्चा उद्देश्य पता चला।

दादी जी अनगिनत गुणों की खान हैं, उनके सानिध्य में मन को शांति प्राप्त होती है

– सुरेन्द्र गोयल,ग्रामीण विकास व पंचायती राज्यमंत्री ,राजस्थान।

लाखों आत्माओं का जीवन संवारने वाली दादी जानकी इसी तरह आध्यात्मिकता का संदेश जन-जन तक पहुंचायें – चरणजीत सिंह अटवाल,अध्यक्ष,पंजाब विधानसभा

सौ वर्ष की उम्र की दादी जानकी ने आध्यात्मिकता को नयी दिशा प्रदान कर दी है।

दादी जी ने विश्व में एक नई चेतना का संचार किया है– सुरेन्द्र सिंह नेगी,चिकित्सा व परिवार कल्याण मंत्री,उत्तराखण्ड।

मुस्कराने से जीवन संवर जाएगाः रमेशचंद्र अग्रवाल

इंसान के पास भले ही पैसा होगा, लेकिन वह इससे मन की शांति नहीं खरीद पाएगा क्योंकि आने वाले समय में मन की शांति ही सबसे महंगी होगी। ऐसा कहना था दैनिक भास्कर समूह के चेयरमैन रमेशचंद्र अग्रवाल का। दादी जानकी के जन्म शताब्दी समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य को आत्मसंतुष्टि प्राप्त करनी होगी। हम सभी तो बहुत ही सौभाग्यशाली हैं जो हमको ये असाधारण सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर वातावरण मिला। इसलिए मुस्कराइए, मुस्कराने से जीवन समस्याओं से उबर जाएगा।

वात्सल्य और ममता की खान से भरपूर संस्थानः कोठारी

आज एक ऐसा वातावरण देखने और महसूस करने को मिला जिसकी मुझे अभिलाशा थी लेकिन आज तक मिल नहीं पाया था, लेकिन दादी जानकी और दादी हृदयमोहिनी के साथ वो वातावरण मुझे मिला। ऐसा कहना था राजस्थान पत्रिका के मुख्य संपादक गुलाब कोठारी जी का। दादी जी के शताब्दी समारोह में बोलते हुए उन्होंने कहा कि दादी जी ने परमात्मा के श्रीमत को सवीकार कर अपने जीवन को उनके जैसा बना लिया है। दादी जी सच में उस पात्रता के लायक हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था में श्रद्धा, भावना और वात्सल्य हमें प्राप्त होता है जो दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता। इस संस्थान में मातृभाव है और कुछ ना लेने की इच्छा हमें अपनी ओर खींचती है।

पवित्रता का शपथ ग्रहण करने वाली एकमात्र संस्था

पिछले छः दशकों में मैंने 80 देशों की यात्राएं की लेकिन कहीं भी किसी महापुरुष का सौंवा जन्मदिन मनाते लोगों को नहीं देखा। ऐसा कहना था भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेद प्रताप वैदिक का। ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व भर में महिलाओं द्वारा संचालित सबसे महान एवं ब्रह्मचर्य का शपथ ग्रहण करने वाली एकमात्र संस्था है जो नारी शक्ति का शंखनाद कर रही है। उन्होंने कहा कि ब्रह्मचर्य का अर्थ सिर्फ

सम्बंधों तक सीमित नहीं है बल्कि इसका अर्थ ब्रह्म-चर्या अर्थात् ब्रह्मा समान आचरण से है। ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। आसन, प्राणायाम ही योग नहीं बल्कि चित्त को नियंत्रित करना ही योग है। ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य को देखकर विश्वास उत्पन्न होता है कि भारत अवश्य ही एक महान शक्ति बनकर उभरेगा। ऐसी विभूति के लिए मैं दीर्घायु की कामना करता हूँ।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान

अभियान का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए दैनिक भास्कर समूह के चेयरमैन रमेशचन्द्र अग्रवाल। साथ हैं दादी रतनमोहिनी।

कार्यक्रम के दौरान महिला सशक्तिकरण के लिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का विधिवत शुभारंभ किया गया। डॉ. ब्र.कु. सविता ने बताया कि इसके अंतर्गत अगले माह कार रैलियाँ भी आयोजित की जाएंगी। इस अवसर पर ब्र.कु. सरला ने संस्थ के ग्रामीण विकास प्रभाग द्वारा की जा रही किसान उत्थान एवं ग्रमीणों का विकास सम्बंधी योजनाओं से सभी को अवगत

ग्रामीण विकास योजनाओं से कराया अवगत

कराया। किसानों के शाश्वत यौगिक खेती अभियान का विधिवत उद्घाटन करवाया।

सफलता का रहस्य

एक युवक बार-बार मिली असफलता से ऊबकर हताश होकर एक पेड़ के नीचे बैठा था, इतने में उसकी नज़र बायें रास्ते पर लगे बोर्ड की ओर गई। बोर्ड पर लिखा हुआ था - ``सफलता का मार्ग इस ओर है''।

वो युवक पुलकित हो गया। उसे किसी भी तरह से सफलता का रहस्य जानना था। निष्फलता की बौछार ने उसे हतप्रभ बना दिया था। वो युवक खड़े होकर उस दिखाई देनेवाले बोर्ड के अनुसार मार्ग की ओर आगे बढ़ने लगा।

थोड़ी देर के बाद उसने एक छोटी सी गहरी खाई देखी...उसके समाने लिखा था- ``सफलता का मार्ग इस ओर! जम्प लगाना आता है?''

- ब्र. कु. गंगाधर

उस युवक ने दो-तीन बार छलांग(जम्प) लगाने की कोशिश की पर वो सफल नहीं हुआ। लेकिन वो सफलता पाने का रहस्य जानने के लिए अदम्य उत्साह में था। आखिरकार वो जम्प लगाकर खाई को पार कर गया। उससे एक-दो किलोमीटर की दूरी पर आगे गया तो वहाँ तीसरा बोर्ड दिखाई दिया- सफलता का मार्ग इस ओर... वो आगे बढ़ा। सामने एक नदी थी। उसके किनारे पर सफलता के मार्ग का चौथा बोर्ड था, सफलता के लिए नदी पार करें...तैरना आता है?

युवक घबरा गया। नदी कितनी गहरी होगी, मैं डूब गया तो!

लेकिन उसने हिम्मत रख नदी में छलांग लगाई। उसे ख्याल आया कि नदी तो छिछरी है, गहरी नहीं है। तैरने की तो ज़रूरत ही नहीं है। उसने आनंदपूर्वक नदी को पार कर लिया।

दो किलोमीटर जितना पैदल चला तो उसे पाँचवा बोर्ड दिखाई दिया- `सफलता के मार्ग को जानने के लिए सामने की ओर नज़र करें। उस शिखर पर पहुँचेंगे तो सफलता का रहस्य मिल जायेगा।

उसने सामने की ओर अपनी नज़र की तो टेढ़ा-बांका रास्ते का पर्वत शिखर! चढ़ना बहुत कठिन और खतरे से खाली नहीं, लेकिन युवक को अब हिम्मत आ गई थी। उसने चढ़ना आरंभ किया...उसे शिखर पर तीन बोर्ड दिखाई दिये। पहले बोर्ड पर लिखा थाः अपनी इच्छा, ज्ञान और क्रिया को अलग-अलग रखकर भटकने न दें। दूसरे बोर्ड पर लिखा थाः आप अपने से न घबरायें, न हारें। तीसरे बोर्ड पर लिखा थाः सफलता के लिए आपको यह तीन शस्त्र लगेंगे। अपनी आँखें खुली रख परिस्थितियों का मूल्यांकन करो, उद्देश्य की ओर महत्वाकांक्षापूर्ण दृष्टि रखो, जो काम आपको करना है उसके लिए योग्यता अर्जित करो, आने वाले विघ्नों को हटाते रहो और आवश्यक साहस जुटाने में पीछे नहीं हटो।

युवक की थकान मिट गई। उसमें नयी चैतन्यता का उद्गम हुआ और एक कारखाना स्थापित कर, रात-दिन मेहनत कर एक उद्योगपति बनने में वो युवक सफल हुआ।

बहुत लोगों में शक्ति भी होती है और बुद्धि भी। फिर भी वे खुद सफल नहीं होने की आशंका व्यक्त करते रहते हैं। उनकी निष्फलता का कारण ये होता है कि वे निष्ठा और समर्पण का बीज बोये बिना ही अत्यधिक कमाई की अपेक्षा रखते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि योग्य आयोजन और काबिल नेतृत्व के बिना महासेनाएं भी युद्ध में हार गई हैं और योजनाबद्ध रीति से लड़ने वाली और दृष्टिसम्पन्न नेता की अगुवाई में छोटी सी सेना भी विजय की वरमाला पहनने की अधिकारी बनी है। इसलिए बुद्धिपूर्वक आयोजन को सफलता की सीढ़ी बनाना ही श्रेष्ठ विकल्प है।

सफल मनुष्य जब तक कार्य सर्म्पूण न हो तब तक वाणी पर नियंत्रण रखता है। वो खुद बोलता नहीं; उसका काम ही उसकी वकालत करता है। मनोभाव को शांत रखना और सदैव आशान्वित रहना, ये निर्धारित लक्ष्य सिद्धि के मददगार हैं। पराजयों की सूचि को याद करने वालों को भूलकर निर्भय बन, उमंग-उत्साह से तत्पर व्यक्ति आसन आगे बिछाता है।

इच्छायें तो पहल किये बिना हीरे जैसी हैं। उसका मूल्य परखकर पासादार बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। प्रयत्नों की सत्यता, ये सफलता की यात्रा को किनारे पहुँचाने की नौका के चप्पु हैं। सफलता की व्याख्या करते किसी - शेष पेज 8 पर

पुण्यात्मा वह है जो अच्छे संग में रहे, सबको अच्छा संग दे

जो मंथन नहीं करता है वो मोटी बुद्धि है। ज्ञान है सोल कॉन्सेस रहना, इसके लिए ड्रामा की नॉलेज स्मृति में रहे। सबसे बड़ी बीमारी है - थकना, मूँझना, घबराना। मेरे से नहीं होता है ना अरे, कौन हो! बकरी हो क्या? जितनी भी स्थिति जिसकी है, सेवा और संग, साथ से फायदा होता है।

परिवर्तन मुझे होना है, बाबा देखेगा बच्ची को कोई बात नहीं, सभी देखेंगे इसको और कोई बात ही नहीं है, परिवर्तन भी क्या होना है? विकर्माजीत बनना है। उसकी निशानी है, कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। जो संकल्प आता है तो वह कर्म में भी आता है। बहुत डीप है। मेरा संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ है तो इससे मेरे लिए भी फायदा, आपको भी फायदा। एक तरफ मैं विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ कर रही हूँ, दूसरे तरफ कर्म करते कर्मातीत, संबंध में होते कर्मातीत यानि किसी के साथ हिसाब-किताब नहीं। यह शुद्ध संकल्प भावना वाला संकल्प औरों को भी परिवर्तन करता है। पर पहले मैं ऐसा स्वरूप रहूँ विकर्माजीत, कर्मातीत और श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो बाबा कैसा था, वह अनुभव करें क्योंकि आप सभी भी बैठे हो, सिर्फ बाबा का परिचय सुनने से नहीं बैठे हो, बाबा कैसा था, अभी भी कैसा है... जिसको परिवर्तन होना है वह दस बारी बाबा के रूम में जावे। जा करके आधा घण्टा बैठो, पता चलेगा बाबा कैसा है, उन जैसा मुझे बनना है। मुझे किससे भेंट नहीं करनी है क्योंकि हरेक का पार्ट अपना है। सबका भला हो, यह भावना हो तो परिवर्तन मुझे क्या होना है, बस, बाबा जैसा! बाबा कैसा था, कैसा है, अभी भी है, अच्छी तरह से काम कर रहा है और ज़्यादा कर रहा है। तो जहाँ ऐसे अच्छे स्थान मिले हैं उनका फायदा उठाओ। जब याद में बैठो तो कोई संकल्प न चले, भले कार्य हुआ, पूरा हुआ। पूछे कोई कैसे किया? देखो वंडर है, कहो हो गया। सेवा है मुस्कराने की। देखते हैं इतना सब कार्य करते हुए भी खुश रहते हैं।

एक मन की सफाई, दूसरी स्थूल सफाई न होती तो बीमारियाँ हो जाती, तीसरा मुस्कराना न आता हो तो भी बीमार कहेंगे। यह परिवर्तन की घड़ियाँ हैं, अभी मुझे होना है तो बाबा और परिवार एकदम साथ देता है। परिवार का प्यार बहुत काम करता है।

सब बातों का ज्ञान तो है ना, मेरा पूर्व जन्म का या इस जन्म का भी कोई कर्मबंधन हो, किसी के साथ भी, भले वह मेरे बहन भाई या पति पत्नी हैं, जन्म ही लिया या शादी भी किया, वह पूर्व जन्मों के कर्मों अनुसार। पर अभी उस लौकिक लाईफ का अंश मात्र भी न हो, जैसे बाबा, यह मेरी बहू है, यह मेरी वाईफ है, यह भान नहीं रहा। बाबा के बने हैं तो भाग्यवान हैं, पर ईश्वरीय परिवार में चलते-चलते किसके साथ कोई हिसाब-किताब ऐसा होता है जो रियलाईज़ नहीं करते हैं, बढ़ाते रहते हैं, फिर वह चुक्तू करने के लिए बड़ी रियलाईज़ेशन चाहिए। यह हमारी अभी की लाईफ ही डिफरेन्ट है। हम क्या थे, क्या हैं...। पहले थे बॉडी-कॉन्सेस, अभी सोल-कॉन्सेस हैं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

तो सम्बन्ध में न्यारे हो करके रहो, किसको दुःख नहीं दो। ऐसे अच्छे कर्म करेंगे, आज्ञाकारी रहेंगे तब आशीर्वाद मिलेगी। जब मैं अच्छी बनूंगी तब आप सब से दुआयें मिलेगी। मैं अच्छे संग में रहूँ, औरों को यह संग दूँ, यह है पुण्यात्मा बनना। बाबा देखता है बच्चा देह-अभिमान को छोड़, न्यारा बन मेरी याद में बैठा है तो बाबा का प्यार मिलता है। यह शक्ति है याद में। जैसे साकार में बाबा को देखने से अशरीरी हो जाते थे फिर ऐसी ही आदत डालनी है। योग के वायब्रेशन से औरों को साक्षात्कार होगा, कइयों को मधुबन का साक्षात्कार यहाँ बैठे होता है। मधुबन आते हैं तो मधुबन को देख भूलते नहीं है, तो वह शक्ति चला रही है। सब राज़ी-खुशी हो तो दुआयें सबकी चला रही है, बाबा की अलग हैं, बाबा दुआओं के साथ गुप्त सकाश भी देता है। शिवबाबा कहता है मैं इनसे कराता हूँ, मैं नहीं करता, ऐसी देही-अभिमानी स्थिति, ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न हो। तो बाबा को ऐसा लायक बच्चा चाहिए जो बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बने।

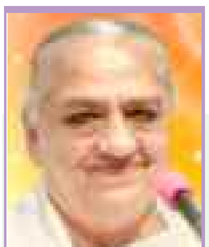

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें ड्यूटी दी है खुश रहने और सभी को खुश रखने की

आप सबके मन की खुशी आपके चेहरे से दिखाई दे रही है और ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनने के बाद तो ज़्यादा खुशी ही रहती है। कोई कारण वश कोई की खुशी कभी थोड़ी कम हो जाती है तो भी बी.के. को फिर से वापस खुश होने में टाइम नहीं लगना चाहिए। उसी समय ही बाबा के पास जाके बाबा को कहना चाहिए बाबा हमारी खुशी हमारे पास ही रहेगी। और बाबा से खुशी लेके चलेंगे, फिरेंगे, देखेंगे, सब कार्य व्यवहार करेंगे तो कभी खुशी कम नहीं होगी। वैसे खुशी गंवानी नहीं चाहिए, खुशी गंवाने से आपने देखा होगा कि अवस्था अच्छी नहीं रहती है। ऐसे भी खुश रहने वाला ही सबको अच्छा लगता है, या सीरियस रहना अच्छा लगता है? बाबा की शक्ल देखते हैं तो सदा खुशी की लगती है ना! बाबा बहुत अच्छा लगता है ना। जैसे बाबा सबको अच्छा लगता है, ऐसे हम भी सभी को अच्छे लगें। अच्छे लगने चाहिए ना? सबका बाप से प्यार बहुत है तो बाप समान बनना है ना! तो फिर यही ट्रायल करो रोज़ सवेरे उठते ही अपने से विशेष यह प्रॉमिस करो कि इस सप्ताह में कुछ भी हो जाए किसी भी कीमत पर मुझे मेरी खुशी नहीं गंवानी है। जैसे ही सवेरा आरंभ हो तब से लेकर सारा दिन और रात को सोने तक खुश रहना है और खुश करना है, यह याद रखना है। हर घण्टे चेक करके नोट करो अभी जो समय बीता वो खुशी में बिताया या खुशी के साथ गम तो नहीं रहा? सारा दिन रात खुशी आई और गई, ऐसे तो नहीं होता?

योग में बैठते हैं बाबा से मुलाकात करते हैं, तो बाबा को कहना चाहिए बाबा मुझे आज खुश रहना है, इसमें आप मददगार बनना, ऐसे बाबा से बातें करना तो कभी खुशी नहीं जाएगी। ऐसे बी.के. की खुशी जानी नहीं चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दुनिया का क्या हाल होगा? क्योंकि बाबा ने हम बच्चों को निमित्त बनाया सबको खुश रखने का काम दिया है या कहे ड्यूटी दी है बाबा ने। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को कैसे खुश करेंगे इसलिए हमको तो पहले खुश रहना पड़ेगा ना। तो सदा खुश रहना चाहिए ना। हमेशा याद रखो बाबा ने हमारे ऊपर क्या ड्यूटी रखी है! यही ड्यूटी दी है खुश रहो खुश करो। तो याद रहती है ना बाबा की ड्यूटी? बहुत अच्छा क्योंकि संसार बहुत दुःखी है, उसे हमको बदलना है, हमारा काम ही क्या है? दुःखी को सुखी बनाना। हम खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को खुश कैसे करेंगे? हो सकता है ना! बस, जिस समय कुछ होवे ना, तो पहले बाबा शब्द याद करो, बस बाबा कहा और खुशी में रहने की जो बाबा से प्रतिज्ञा की है वो याद आने से खुश रहेंगे। बाबा से प्रॉमिस किया है तो उसे बार-बार याद करने से भी खुशी आ जायेगी। इसमें भले दो-दो-हाथ उठाओ। भगवान के हम बच्चे खुश नहीं रहेंगे तो और कौन रहेंगे।

दिल से मेरा बाबा कहो तो दिल खुश रहेगी। मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। प्यारा कैसे भूल सकता है! बाबा ने बहुत खुशी का खज़ाना दिया है तो कभी भी हमारे फेस से खुशी गायब नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो परमात्मा के बच्चे और खुश न रहें, यह हो ही नहीं सकता इसलिए खुशी कभी नहीं गंवाना, जो भी कोई कुछ बात हुई हो उसे किसी को सुना करके व कैसे भी करके पेट से निकाल दो। उसको अंदर में नहीं रखो। बाबा के बच्चों को कभी भी कोई अचानक देखे ना, तो खुशी वाली शक्ल ही दिखाई देवे। हो सकता है? अच्छा लगता है ना आपस में ऐसे मिलने से खुशी होती है ना। वाह बाबा वाह, वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह!

धर्मों की नहीं कर्मों की लड़ाई लड़नी है – फारुख अब्दुल्ला

शांतिवन। हमारा पड़ोसी देश भले ही कितने वार करे लेकिन कश्मीर भारत से अलग नहीं हो सकता। आतंकवाद के बैनर तले नित नई मुसीबतें खड़ी करने की कोशिशें की जा रही हैं लेकिन हम आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेकेंगे। वह दिन दूर नहीं जब आतंकवाद इस दुनिया से खत्म हो जाएगा। उक्त विचार दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री फारुख अब्दुल्ला ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि मैं पिछले 35 वर्षा से इस संस्था से न केवल वाकिफ हूँ बल्कि इसकी सेवाओं का भी कायल हूँ। भगवान मंदिरों में और खुद मस्जिद में भले ही न दिखाई दे, वह इंसान के दिल में ज़रूर बसता है, और इंसानों की सेवा करके ब्रह्माकुमारीज़ परमात्मा की सेवा कर रही है। इस संस्था ने देश-दुनिया में इंसानों का दर्द बांटा है। एक दिन ऐसा आएगा कि जब हर कोई इस संस्था की उपयोगिता और उपलब्धियों के प्रति नतमस्तक होगा।

महिला आरक्षण बिल लागू करने में देरी की अपरोक्ष रूप से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए फारुख अब्दुल्ला।

कि राजनेता प्रायः कहते हैं कि महिलाओं को उनके अधिकार मिलने चाहिए लेकिन जब अधिकार देने का अवसर आता है तो हाथ पीछे खींच लेते हैं। इन परिस्थितियों में भी ब्रह्माकुमारीज़ ने महिलाओं को मज़बूत आधार उपलब्ध कराया है। धर्म के नाम पर मतभेदों व नफरत की चर्चा करते हुए अब्दुल्ला ने कहा कि हमें धर्मों की लड़ाई नहीं बल्कि कर्मों की लड़ाई लड़नी है। भगवान के सामने उसी तरह हम एक समान हैं जिस तरह डॉक्टर के सामने मरीज। जब किसी मरीज का जीवन बचाने के लिए खून की ज़रूरत पड़ती है तो कोई यह नहीं पूछता कि खून हिन्दु का है या मुसलमान का। अस्पताल से बाहर निकलते ही सबको अपना-अपना धर्म याद आ जाता है। उन्होंने कहा कि दादी जानकी जैसी महान विभूतियों के आदर्श अपनाते हुए हम परमात्मा से दुआ करें कि वह हमें सच्चा इंसान बनाएं। हमें सही रास्ते पर चलकर भारत का नाम संसार में सूर्य की तरह चमकाना है।

पिछड़ी जाति आयोग के अध्यक्ष जस्टिस वी.ईश्वरैय्या, श्री जयसुंदरम मिल्स के प्रबंध निदेशक कोठाई दिनाकरण के अलावा रूस से आयीं ब्र.कु. संतोष, सनफ्रांन्सिसको से आयीं ब्र.कु. चंद्रू, नेपाल की ब्र.कु. राज, पंजाब ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. अमीरचंद, ओ.आर.सी. गुड़गांव की ब्र.कु. आशा, कोलकाता की ब्र.कु. कानन आदि ने दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के सानिध्य में प्राप्त अनुभव सांझा किए।

समारोह में नेपाल, रूस व भारत के सिकंदराबाद क्षेत्र से आए कलाकारों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए।

रक्तचाप की दवा: एक अद्भुत बूटी

स्वास्थ्य

जटामासी का उपयोग निद्रा लाने वाली तथा हृदय को तात्कालिक बदलने वाली एक अच्छी औषधि के रूप में किया जाता है। आयुर्वेद में जटामासी का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से किया जाता है। बढ़े हुए रक्तचाप को घटाने में तथा हृदय को स्थायी बल देने में इसका प्रभाव अद्भुत है। यह शरीर के अंगों में उठने वाले आक्षेपों को दूर करती है तथा स्नायुविक दौर्बल्य की अवस्था में शक्तिवर्द्धक के रूप में काम करती है।

यूरोप के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हिप्पोक्रेट के औषधि विज्ञान (फार्मकोपिया) में भी इसका उल्लेख है। इसका ज्ञान सर्पगन्धा से भी पहले लोगों को हुआ, ऐसा कहा जाता है। मे.जे. बॉवर द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों में इस सुगंधित बूटी का उल्लेख है। यह हस्तलिखित ग्रन्थ वास्तव में अत्यन्त प्राचीन है। खोतान (पूर्वी पाकिस्तान) के कच्चा नामक स्थान में प्रवास करते समय मेजर जनरल एच बॉवर को वहाँ के एक निवासी ने उपहार के रूप में यह बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ दिया था, जो अब तक पृथ्वी के नीचे गड़ा पड़ा था। मेजर जनरल बॉवर ने अपनी ओर से उसे बंगाल की 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' के तत्कालीन सभापति को भेंट कर दिया। डॉ. हार्नल कुछ वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद उस हस्तलिखित ग्रन्थ को पढ़ने में सफल हुए। पीछे वह पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ।

कहा जाता है कि कच्चा के पास किसी मठ में साधुओं के द्वारा समय-समय पर यह हस्तलिखित ग्रन्थ लिपिबद्ध हुआ था। उसमें औषधि - गुण सम्पन्न बूटियों का पासे द्वारा भविष्य कथन की विधि, मंत्रों के द्वारा सर्पदंश की चिकित्सा आद विषयों का वर्णन है।

आयुर्वेद के अनुसार जटामासी के गुण – यह रोधक, कटु और स्वाद में मीठी होती है। यह वात, पित्त और कफ- इन तीनों का शमन करने वाली है। शरीर की जल को शान्त करती है तथा कुष्ठ, रक्त में विष-प्रवेश एवं विसर्प को अच्छा करती है। त्वचा पर चन्दन की तरह लगाने पर उसको कोमल बनाती है, ज्वर का नाश करती है तथा ऊपरी चर्मरोग को दूर करती है।

यह सदाबहार बूटी है। इसका पृथ्वी के नीचे रहने वाला अंश ही औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है। वह अंगुली जितना मोटा और भूरे रंग का होता है। वह सर्वत्र छोटे-छोटे रोमूपी मूलों से भरा रहता है। इसमें से एक मन्द-मधुर सुगन्ध निकलती है।

हिमालय प्रदेश में यह प्रचुरता से उत्पन्न होती है। पश्चिम बंगाल के गंगा तटवर्ती स्थलों में भी यह प्राप्त होती है। संस्कृत में इसे जटा-मासी, भूतजटा, जटिला तथा तपस्वी कहते हैं।

इसको चूर्ण रूप में 1 अथवा 2 चायवाले चम्मच की मात्रा में दे सकते हैं या काढ़े के रूप में शहद के साथ दे सकते हैं। काढ़ा बनाने के लिए थोड़ा-सा (गिनती में 3-4) लेकर किसी मिट्टी के बर्तन में एक गिलास पानी के साथ तब तक उबालना चाहिए जब तक पानी जलकर आधा न रह जाये।

सामर्थ्य से अधिक श्रम करने के कारण जिनको अच्छी या पूरी नींद नहीं आती, चक्कर आते हैं, स्नायविक दुर्बलता अनुभव होती है, उनको फिर से शक्ति देने में यह एक आदर्श औषधि है।

आधे से एक तक चाय की चम्मच भर जटामासी का मधु या मिश्री के घोल के साथ सेवन रक्तचाप को ठीक करके अभीष्ट सामान्य स्तर पर बनाये रखने में बड़ा उत्तम कार्य करता है। इसके प्रयोग से हृदय रोग में भी अच्छा लाभ होता है। श्वेत कूष्माण्ड, शतमूली अथवा ब्राह्मी के रस के साथ जटामासी का सेवन उन्माद रोग में अच्छा प्रभाव दिखाता है। जटामासी निश्चय ही अच्छी नींद लाने वाली औषधि है। जटामासी का बालों पर भी आश्चर्यजनक प्रभाव होता

लो ब्लडप्रेशर के घरेलू उपाय

➤ 50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात में 100 ग्राम पानी में किसी काँच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबाकर खाएँ और पानी को पी लें। यदि देशी चने न मिल पायें तो सिर्फ किशमिश ही लें। इस विधि - शेष पेज 4 पर

शांतिवन। दादी के शताब्दी महोत्सव में शरीक होने के पश्चात् दादियों से मुलाकात करते हुए फिल्म अभिनेत्री वर्षा उसगावकर।

शांतिवन। दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के साथ मुलाकात के दौरान ज्ञानचर्चा करते हुए प्रसिद्ध गायक अभिजीत भट्टाचार्य, उनकी धर्मपत्नी व ब्र.कु. दिव्यप्रभा।

शांतिवन। राजयोगिनी दादी जानकी को उनके 100वें जन्मदिवस के समारोह में 100 अलग-अलग फूलों से बनाया हुआ हार पहनाते हुए ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. नंदकिशोर व डॉ. सतीश देसाई।

फिलीपींस। फिलीपिनो कार्डिनल लूईस टैगल व अन्य मेहमानों को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रजनी।

पुणे। भारत सरकार का फिल्म जगत का सर्वोच्च पुरस्कार 'दादा साहेक फालके पुरस्कार' विजेता विश्वविख्यात सिनेमा निर्देशक पद्मभूषण से सम्मानित शाम बेनेगल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक हरके।

मुम्बई-वोरीवली। आर.टी.ओ., महिन्द्रा व ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'लार्जेस्ट रोड सेफ्टी क्लास' के दौरान उपस्थित हैं सुभाष देसाई, मिनिस्टर फॉर इंडस्ट्रीज़,महा., रणविजय सिंह,एक्टर, दीनो मोर्या,एक्टर, पुलकित शर्मा,एक्टर, शान,सिंगर, भूमि त्रिवेदी,सिंगर व डी.सी.पी.।

शांतिवन। दादी के शताब्दी महोत्सव के दौरान नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम वरण यादव को ओमशान्ति मीडिया द्वारा हो रही सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. दिलीप।

आदीपुर-गुज.। स्वच्छ और श्रेष्ठ भारत के पुनर्निर्माण समारोह में गांधीधाम नगरपालिका की अध्यक्ष श्रीमती गीता बहन गणात्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गोदावरी।

आणंद-गुज.। 'तनावमुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् जिला डी.वाय. एस.पी. कोमल व्यास को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

आणंद-गुज.। पिताश्री ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मंचासीन हैं पत्रकार विपिन पंडया, सरदार पटेल हाईस्कूल के प्रिन्सीपल केतनभाई गांधी, ब्र.कु. गीता व ब्र.कु. कुसुम।

आइया नगर-गुज.। गुर्जर क्षत्रिय समाज द्वारा 'अवसर' बुक का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित अमृतभाई वगेड, समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवरजीभाई, राष्ट्रीय उप प्रमुख विनोदभाई सोलंकी, संत वासुदेव महाराज, उद्योगपति मनोजभाई, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. इला, राष्ट्रीय उप प्रमुख ब्र.कु. बाबूभाई व अन्य।

गांधीनगर सेक्टर-27(गुज.)। दादी जानकी के 100वें जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अंजना, ब्र.कु. जयश्री, ब्र.कु. चंदा, ब्र.कु. मनोज, कॉर्पोरेटर जयश्री पुरोहित व अन्य।

स्ट्रेस का कारण परिस्थिति नहीं बल्कि मैं स्वयं!!!

प्रश्न: शरीर को आराम देने के लिए तो हमने छुट्टी ले ली, लेकिन मन को आराम कैसे मिलेगा?

उत्तर: मन को आराम देने के लिए हमें पन्द्रह दिन का हॉलीडे नहीं चाहिए। मुझे सिर्फ सारा दिन में बीच-बीच में एक मिनट के लिए इसको रेस्ट देना पड़ेगा क्योंकि यह माइंड ऐसा नहीं है कि पूरा टाइम आप ऐसे काम करो फिर पन्द्रह दिन आराम दो। पन्द्रह दिन तो आप शरीर को आराम दे रहे हो, मन फिर भी काम कर रहा है। इसमें हमें यह देखना है कि इन पंद्रह दिनों में मन ने किस प्रकार के थॉट क्रियेट किये और वो भी किस क्वालिटी के। छुट्टी पर जाना या रेस्टोरेंट में जाना या किसी पार्टी में जाना, यह सब ठीक है। मनोरंजन एक अच्छी चीज़ है लेकिन यह स्ट्रेस को समाप्त नहीं कर सकती है और यह स्ट्रेस का समाधान भी नहीं है। स्ट्रेस का समाधान हमारी थॉट पावर में है। जब आप अपने काम को, अपनी पढ़ाई को, अपनी स्वाभाविक रूटीन को एन्जॉय करना शुरू कर देते हैं तो फिर हॉलीडे पर जाने का विचार ही नहीं रहता।

हॉलीडे की फीलिंग कब आती है? जब मैं आराम चाहती हूँ तब इसकी फीलिंग आती है। अब प्रश्न उठता है कि हम ब्रेक क्यों लेते हैं क्योंकि तब हम खुश नहीं होते हैं। अगर आप हर रोज़ को एन्जॉय करना शुरू कर देते हैं, हर रोज़ हल्के रहते हैं तो ब्रेक लेकर क्या करेंगे। जो कार्य आप कर रहे हो और उसी के अंदर अगर आप सही सोच से उसको मौज करते हो तो इसके बाद का दिन स्वतः ही अच्छा बीतता है। फिर हमें ब्रेक लेने की जरूरत नहीं पड़ती है।

प्रश्न: स्ट्रेस से छूटने के लिए हमने सोचा कि हॉलीडे या ब्रेक लेते हैं, लेकिन जब हम ब्रेक से वापस आते हैं तो स्ट्रेस वहीं रहता है और वो कारण भी वहीं रहता है।

ब्र. कु. शिवानी

उत्तर: स्ट्रेस को लेकर जो एक बहुत बड़ा बिलीफ है वो ये है कि मेरे स्ट्रेस का कारण बाहर है। क्यों हमने दूसरा बिलीफ पकड़ा कि 'तनाव होना नैचुरल है', 'टेंशन होना नैचुरल है', क्योंकि टेंशन का कारण बाहर था। टेंशन का कारण था परीक्षा, टेंशन का कारण है पाठ्यक्रम, टेंशन का कारण है मेरा बॉस, टेंशन का कारण है समाज, टेंशन का कारण है पूरा सामाजिक ढांचा, सरकार, तो जैसे ही मैंने इन सब चीज़ों को अपनी टेंशन का कारण बताया, फिर मुझे दूसरी बात ये भी पता है कि मेरे अनुसार ये सब चलने वाले नहीं हैं, ये होने वाला ही नहीं है, फिर मैंने कहा मेरे तनाव का कारण आप हैं। आप बदलते नहीं हो, तो फिर मुझे तनाव में तो रहना ही पड़ेगा। तो मैं कैसे आशा करूं कि तनाव होना सहज है।

प्रश्न: परिस्थिति तो कुछ भी नहीं हो रहा होती है, तब तो ऐसे ही जीना पड़ेगा।

उत्तर: तब हमने कहा कि अगर आप किसी से भी पूछो कि आपको टेंशन होती है? कहेगा समय ही ऐसा चल रहा है, समाज ही ऐसा है। क्यों? क्योंकि मेरी टेंशन का कारण कौन है - समाज। समाज का मतलब हर वो व्यक्ति जिसके सम्पर्क में हम आते हैं।

प्रश्न: सीधा जवाब यही आता है कि आपको नहीं होती, कोई ऐसी चीज़ है, कोई ऐसी जगह है जहां टेंशन न होती हो।

उत्तर: टेंशन से बचने वाली कोई जगह है इस दुनिया में? यदि आप इस बीमारी से अपने-आपको मुक्त करना चाहते हैं तो सिर्फ इस बिलीफ सिस्टम को बदल तो आपका कार्य स्वतः ही हो जायेगा, 'कोई नहीं और कुछ नहीं' नोवन, जब हम कहते तो नोवन तो उसका अर्थ होता है हमारे स्ट्रेस का कारण परिस्थिति नहीं है, बल्कि हम स्वयं हैं। हाँ, परिस्थिति चुनौतिपूर्ण है, लेकिन आपको पता ही नहीं कि क्या हुआ। हमने कुछ दिन पहले ही देखा हमारे परिवार में एक बच्चे की मृत्यु हो गयी थी। इससे ज़्यादा बड़ी परिस्थिति किसी के जीवन में कोई हो ही नहीं सकती है। लेकिन फिर भी वो बाहर है, वो परिस्थिति यहां है। उस परिस्थिति में हमें किस प्रकार से सोचना है या किस प्रकार से व्यवहार करना है ये हमारे हाथ में है। एक ही चीज़ है जो मेरे हाथ में है और कुछ भी मेरे कंट्रोल में नहीं है। लेकिन उसी को मैंने सोचा कि यही मेरे हाथ में नहीं है। जिसके फलस्वरूप सब कुछ मेरे कंट्रोल से बाहर चला गया। -क्रमशः

रक्तचाप की दवा... - पेज 3 का शेष

से कुछ ही सप्ताह में ब्लडप्रेशर सामान्य हो जाएगा। रात को बादाम की 3-4 गिरी पानी में भिगो दें और सुबह उसका छिलका उतार कर 15 ग्राम मक्खन और मिश्री के साथ मिलाकर बादाम गिरी को खाने से लो ब्लडप्रेशर नष्ट होता

- प्रतिदिन आंवले या सेब के मुरब्बे का सेवन लो ब्लडप्रेशर में बहुत उपयोगी होता है। आंवले के 2 ग्राम रस में 10 ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिन प्रातः काल सेवन करने से लो ब्लड प्रेशर दूर करने में मदद मिलती है।
- लो ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने में चुकंदर का रस काफी कारगर होता है। रोज़ाना यह जूस सुबह-शाम पीना चाहिए। इससे हफ्ते में आप अपने ब्लड प्रेशर में सुधार ला पायेंगे।
- जटामासी, कपूर और दाल चीनी को समान मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें और तीन-तीन ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गर्म पानी से सेवन करें। कुछ ही दिन में आपके ब्लड प्रेशर में सुधार हो जायेगा।
- जिसको लो बी.पी. की शिकायत हो और अक्सर चक्कर आते हों तो आँवले के रस में शहद मिलाकर चाटने से जल्दी आराम मिलता है। रात्रि में 2-3 छुहारे दूध में उबाल कर पीने या खजूर खाकर दूध पीते रहने से निम्न रक्तचाप में सुधार होता है।
- अदरक के बारीक कटे हुए टुकड़ों में नींबू का रस व सेंधा नमक मिलाकर रख लें। इसे भोजन से पहले थोड़ी-थोड़ी मात्रा में दिन में कई बार खाते रहने से यह रोग दूर होता है। 200 ग्राम मट्ठे में नमक भुना हुआ जीरा व थोड़ी सी भुनी हुई हींग मिलाकर प्रतिदिन पीते रहने से इस समस्या के निदान में पर्याप्त मदद मिलती है।

सीतामऊ-म.प्र.। राष्ट्रीय संत श्री कृष्णानंद जी महाराज को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा एवं ब्र.कु. प्रीति।

ओलपाड-गुज.। सेवाकेन्द्र के 10 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित दशाब्दी समारोह में उपस्थित हैं ब्र.कु. गीता, माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. धर्मिष्ठा व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

पन्ना-म.प्र.। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कैबिनेट मिनिस्टर कुसुम सिंह मेहदेले, वुमेन डेवलपमेंट ऑफीसर श्रीमती सुशीला राम परस्ते, ब्र.कु. पूजा,फरीदाबाद, ब्र.कु. संगीता,दिल्ली, ब्र.कु. सीता व अन्य।

बहुत ही सहज है राजयोग...

भगवान, ईश्वर, अल्लाह, खुदा, वाहेगुरू, गॉड आदि शब्दों से आप परिचित तो हैं ही, लेकिन इन नामों के आधार से हम परमात्मा को सही रूप से पहचानने में आज भी असमर्थ हैं। परमात्मा के स्वरूप के बारे में दुनिया में इतने अधिक मतभेद हैं कि सही सत्य विलुप्त सा हो गया है। इसलिए शायद आज ईश्वर के नाम पर मनुष्य अनेक धर्मों में बँट गये हैं।

आज जब भी कोई ध्यान लगाने बैठता है तो परमात्मा का सत्य ज्ञान न होने के कारण उनकी शिकायत रहती है कि मन तो परमात्मा में लगता ही नहीं। अरे भाई लगेगा कैसे! आपको जब पता ही नहीं है कि कहाँ लगाना है मन को, तो कैसे लगेगा!

गतांक से आगे...

परमात्मा को सही रूप से पहचानने के लिए हमारे पास पाँच कसौटी है, जिससे ये परखा जा सकता है कि भगवान ये हो सकता है। इसका आधार हम शास्त्रगत ही लेंगे और इस पर आप भी तर्क लगाने के लिए तटस्थ हैं। आत्मा के अध्याय में ये बात तो स्पष्ट हो ही गई है कि इन आँखों से दिखाई देने वाले जो भी देहधारी हैं, वे सभी आत्मायें ही हैं। उनमें कोई भी परमात्मा नहीं हो सकता। ऐसा क्यों है वो हम देख सकते हैं।

पहली कसौटी: परमात्मा वो हो सकता है जो सर्वधर्म, सर्वमान्य हो - सबसे पहली कसौटी परमात्मा के बारे में यही है कि वह सर्वमान्य हो अर्थात् सभी उसको मान्यता देते हों। सभी धर्म उस एक को ही मानते हों। लेकिन आज ऐसा नहीं है। क्या राम को सभी मानते हैं? नहीं, केवल हिन्दू धर्म के लोग ही मानते हैं, मुसलमान और ईसाई धर्म के लोग इसे मान्यता नहीं देते। ठीक उसी प्रकार हिन्दू धर्म के लोग भी उनके धर्मों के पीर, पैगम्बरों को मान्यता नहीं देते। सभी धर्म यदि एक को मान्यता दे तो उसे ईश्वर या परमसत्य कह सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।

दूसरी कसौटी : जो सर्वोपरि हो - यहाँ सर्वोपरि का अर्थ है जो सबसे परे हो। मनुष्यात्मा आज जन्म-मरण के चक्र में आती है और कर्म करती है। लेकिन परमात्मा जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है अर्थात् परे है। वो पाप-पुण्य, देह और देह के सम्बन्धों में नहीं आता अर्थात् सुख-दु:ख के चक्र में नहीं आता। यदि वो आता तो वह भी कर्म

करता और हमें कर्मों से बाहर फिर कौन निकालता। यदि राम, कृष्ण, पैगम्बर मोहम्मद साहब, ईसा मसीह आदि को हम देखें तो इन सबने जन्म लिया और मृत्यु भी हुई तथा इन्होंने कर्म भी किया तो आप बतायें कि वो परमात्मा कैसे हो सकते हैं क्योंकि परमात्मा तो जन्म-मरण से न्यारा है।

तीसरी कसौटी : जो सर्वोच्च है - सर्वोच्च से यहाँ मतलब यह है कि उससे ऊँची शक्ति या उसके ऊपर कोई ना हो। जिसका कोई माता-पिता ना हो, कोई गुरु ना हो। जो गुरुओं का भी गुरु है उसे परमात्मा कहा जा सकता है। यदि हम पुन: दिव्य आत्मा या महान आत्माओं को देखें तो सबके गुरु, शिक्षक और माता-पिता थे तो वो सर्वोच्च कैसे हो सकते हैं।

चौथी कसौटी : जो सर्वज्ञ है - सर्वज्ञ का अर्थ जो सब कुछ जानता हो। जिसके पास संसार के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो, वो परमात्मा हो सकता है। यदि आप धारावाहिकों में या फिर शास्त्रों में या कथाओं में देखें तो दिखाया जाता है कि जब किसी देवी-देवता को समस्या आती है तो अपने से ऊपर किसी को ढूंढ़ता है। अमुक बात यदि ब्रह्मा से पूछें या विष्णु से पूछें तो सही जानकारी मिल सकती है क्योंकि वो हमसे ज़्यादा जानतें हैं, ऐसा आपने देखा होगा। अब यदि ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सबके पास समस्या आ जाए तो वे समाधान के लिए किसके पास जायेंगे। अब यहां सभी एक-दूसरे को अपने से सर्वज्ञ मानते हैं। परमात्मा अनादि और अविनाशी रूप से ही सर्वज्ञ है, उसे किसी से कुछ पूछने या जानने की आवश्यकता नहीं होगी। भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञाता परमात्मा ही होगा। इसलिए उसे त्रिकालदर्शी भी कहते हैं। - क्रमश:

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-18

1			2		■	3			
■	■	■		■	■		■	■	■
4			■	5			■	6	7
	■	8			■	■	■	■	
	■	■	■		■	■	9		
	■	■	10		■	■		■	■
■	■	11			■	■		■	■
12		■		■	■	■	■	■	13
■	■	■		■	■	■	■	■	
14				■	15				

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

परमात्मा द्वारा प्रदत्त गुणों से अपना श्रृंगार करो

ऊपर से नीचे

2. शांति और खुशी बांटना हमें लोगों का प्रिय बनाता है महा.... है (2)
3. यह विश्व एक परिवार है, हमें सबके साथ.... से व्यवहार करना चाहिए (3)
4. परिस्थितियों का सामना करने के लिए .... का गुण आवश्यक है (4)
5. .... स्वभाव हमें लोगों के आदर का पात्र बनाता है (5)
7. शांत और .... स्वभाव हमें लोगों का प्रिय बनाता है (3)
9. आपसी सम्बन्धों में.... बनो (3)
10. जीवन में किसी भी योजना के लिए .... का होना बहुत ज़रूरी है (5)
13. शरीर आत्मा का पवित्र मंदिर है अत: आत्मा और शरीर दोनों में .... रखो (3)

बायें से दायें

1. .... और परिश्रम हमें सम्पत्तिवान बना देंगे (5)
3. आपको कोई अच्छा दे या बुरा आप सबको स्नेह दो....दो (4)
4. जीवन में संयम और .... हमें चरित्रवान बनाते हैं (3)
5. कार्यव्यवहार में .... है तो किसी भी प्रकार का भय उत्पन्न नहीं हो सकता (3)
6. .... जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं (2)
8. उमंग और .... हमें कार्य में सफलता दिलायेंगे (3)
9. .... मन परमात्मा को प्रिय लगता है (3)
11. .... स्वभाव कार्य को सरल बनाता है (3)
12. आत्मा की उन्नति के लिए .... की शक्ति आवश्यक है (2)
14. सन्तुष्टता सर्व गुणों की खान है और .... उसकी पहचान है (4)
15. जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए .... बहुत आवश्यक है (5)

- ब्र.कु.पायल,बोरीवली लोखंडवाला

भोपाल। गांधी मेडिकल कॉलेज में कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में रामरति यादव,नर्सिंग सुपरीन्टेंडेंट,हामीदिया हॉस्पिटल, डॉ. उलका श्रीवास्तव,डीन,जी.एम.सी., ब्र.कु. डॉ. सविता व ब्र.कु. आराधना।

राहूरी-महा.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् पुलिस निरीक्षक संजय पाटील को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संदीप।

डुंगरी-बारडोली। प्रभु दर्शन आध्यात्मिक मेला का उद्घाटन करते हुए डुंगरी केळवणी मंडल के प्रमुख चंदु भाई, सरपंच पंकज डेगरी, जिला पंचायत के चेतन भाई, आसीत भाई, प्रवीणा बहन, ब्र.कु. रीटा, डॉ. दिनेश व अन्य गणमान्य जन।

वर्धा-महा.। मकर संक्रान्ति के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं मधुरांगण की संयोजिका अश्विनी काकड़े, सावंगी रुग्णालय के एज्युकेशन कोऑर्डिनेटर मनीषा ताई मेघे, ब्र.कु. माधुरी, बी.डी. कॉलेज की प्राध्यापिका पल्लवी मंगरुलकर व ब्र.कु. मधु।

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी। विश्व कैंसर दिवस पर 'कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम' का उद्घाटन करते हुए डॉ. एम.आई. लक्ष्मीधर,कन्सल्टेंट सर्जीकल ऑन्कोलॉजिस्ट, आर.एल. हिरवानीया,ग्लोबल कैंसर कन्सर्न इंडिया, ब्र.कु. भानु एवं ब्र.कु. बाबू।

ग्वालियर। गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. ज्योति। मंचासीन हैं शहर के प्रबुद्ध जन तथा अन्य।

मालिया हाटीना-गुज.। आनंद मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मीता। साथ हैं महेन्द्र भाई गांधी, सरपंच जीतुभाई तथा अन्य।

होसुर-तमिलनाडु। गणतंत्र दिवस पर आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन फॉर वैल्यू बेस्ड एडमिनिस्ट्रेशन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा,गुड़गांव हरियाणा। साथ हैं डॉ. टी.टी. शनमुगावेलु, विधायक के. गोपीनाथ, डॉ. वाय.वी.एस. रेड्डी, ब्र.कु. सरोजा व ब्र.कु. सुरेन्द्रन।

इन्दौर-कालानी नगर। मकर संक्रान्ति के अवसर पर पतंगों के माध्यम से परमात्म संदेश देते हुए बीएसएफ के डी.आई.जी. ए.के. यादव, व्यवसायी अमीन कुमार वैद्य, ब्र.कु. जयंती व अन्य।

केशोद-गुज.। गणतंत्र दिवस पर शहर के मुख्य मार्ग पर निकाली गई शोभायात्रा में दिखाई दे रहे हैं ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. शिल्पा तथा अन्य भाई बहनें।

कोरवा-छ.ग.। महात्मा गांधी के पावन स्मृति दिवस पर 'सम्पूर्ण नशामुक्ति का आधार-आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित परिचर्चा के दौरान उपस्थित हैं कमला नेहरू कॉलेज की प्राचार्य कमलजीत कौर, इलाहाबाद बैंक प्रबंधक आशुतोष श्रीवास्तव, गौमुखी सेवाधाम देवपहरी की अध्यक्षा इंदु शर्मा, पूर्वांचल विकास समिति की अध्यक्षा सुधा झा, डॉ. संतोष मेहता, नारी संचेतना समिति की अध्यक्षा रश्मि शर्मा, ब्र.कु. रुक्मणि व अन्य।

मुम्बई-बोरीवली ईस्ट। प्रभु उपवन में महिला समूह को महाराष्ट्र के एक त्योहार 'हल्दी कुमकुम' का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. नीता।

कीव-यूक्रेन। नौकोवा दुमका पब्लिशिंग हाऊस के कॉन्फ्रेन्स हॉल में पब्लिक प्रोग्राम के दौरान 'म्युचुअल अंडरस्टैंडिंग ऐज़ लिविंग वैल्यु' विषय पर सम्बोधित करते हुए डॉ. विजय कुमार।

अपने को सराबोर कर दें परमात्मा के रंग में

हमारी ज़िन्दगी में रंगों का बहुत महत्व है। खाना भी कलरफुल, पीना भी कलरफुल, पहनना भी कलरफुल और जीना भी कलरफुल। इसलिए आप देखें कि लोग बातचीत में एक-दूसरे का मज़ा लेते हुए

कहते हैं कि भाई साहब तो बड़े रंगीन मिज़ाज हैं। कहने का भाव यह है कि हमारे जीवन में रंगीनियों का बड़ा महत्व है। हमको हर समय रंगीनियाँ ही चाहिए। इसी की शायद हमको तलाश रहती है। इसके तह तक हम आपको ले चलेंगे, क्योंकि इसका एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक कारण है। ऐसे ही नहीं हम रंगीन चीज़ें देख लेते हैं या रंगीन कपड़े पहन लेते हैं! कुछ तो है जो हमें इसकी ओर खींचता है।

अगर हम वैज्ञानिक तरीके से इस बात को समझना चाहें तो सबसे पहले हमें अपने मन को समझना है। जिस प्रकार से कम्प्यूटर की भाषा या यूं कहें कि कम्प्यूटर अपने हरेक चीज़ को बाईनरी भाषा (01) में रूपांतरित (convert)करके समझता है। ठीक उसी प्रकार हमारा मन बिल्कुल कम्प्यूटर के समान ही है। यदि हम अपने मन को एक कम्प्यूटर स्क्रीन की तरह देखें और उसके इनपुट डिवाइस के रूप में अपने पंच इंद्रियों को देखें तो, जो कुछ भी हम देखते हैं या सुनते हैं या सोचते हैं या महसूस करते हैं, तो ये सबकुछ हमारे मन के पर्दे पर चार तरह से आता है। जिसमें पहला चित्र, दूसरा रंग, तीसरा ध्वनि या संगीत और चौथा कला और कलाकृति के रूप में हमारे मन के पर्दे पर बार-बार उभरता है। इसलिए आप देखो कि हमको पढ़ी हुई चीज़ भूल जाती है, लेकिन देखी हुई चीज़ या सुनी हुई चीज़ या महसूस की हुई चीज़ें हमेशा याद रहती हैं। कारण कि हमारा मन हमेशा चित्र और रंगों को ही देखता और समझता है, इसलिए छोटे बच्चों को नर्सरी आदि में कलरफुल चित्र दिखाकर पढ़ाई की शुरुआत करते हैं। क्योंकि बच्चों को अंक या फिर लिखावट समझ नहीं आती, उन्हें चित्र समझ में आते हैं। आप भी जब उदास होते हैं तो कहते हैं कि चलो कोई मूवी देख आते हैं, कहीं घूम के आते हैं तो वहाँ तो कोई आप नॉवेल पढ़ने या कोई स्ट्डी करने नहीं जाते, आप वहाँ घूमने जाते हैं और घूमने में आप सीन-सीनरी ही तो देखते हैं। भावार्थ यह हुआ कि हर जगह हम चाहे वैदिक काल से ही लें तो भी ऋषि-मुनी गुरुकुल में अपने शिष्यों को पढ़ाने के लिए कोई कागज़ और कलम का इस्तेमाल नहीं करते थे, उन्हें केवल दृश्य दिखाते थे। उपरोक्त बातों में तो बात हो गई वैज्ञानिक तथ्यों की कि हम चित्र क्यों देखते हैं। अब बात आ गई है कि हम क्या देखें और क्यों देखें। आपको हम बताना चाहेंगे कि प्रत्येक चित्र, प्रत्येक रंग के अंदर एक ऊर्जा होती है और वो ऊर्जा बहुत तीव्रता से हमारे मन को प्रभावित करती है। आज हम दिन-रात गन्दे चित्र, गन्दे दृश्यों का हमेशा अवलोकन करते रहते हैं और ये चित्र जितनी बार हम देखते हैं, उतनी बार हम नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं। बात है हमें या हमारे मन को ट्रेनिंग देने की, इसीलिए शायद भक्तिमार्ग में जो गीत बने, उन गीतों में भी यही था कि हे परमात्मा मुझे अपने रंग में रंग दो, मुझे ज्ञान के रंग में, प्रेम के रंग में रंग दो, सांवरिया, गेरुआ रंगों रूपी रूपक के आधार से हम परमात्मा से जुड़ने का प्रयास करते थे।

तो होली का त्योहार इसी का व्यवहारिक रूप है, जिसमें परमात्मा कहते कि तुम मेरे रंग में रंग के अपने आपको पवित्र बनाओ। आप देखिये, यदि हम कलरफुल कपड़े पहनें तो कुछ दिन में हम बोर हो जाते हैं, लेकिन यदि श्वेत वस्त्र पहनें तो हमें बोरीयत नहीं महसूस होती। कारण है कि सफेद रंग कोई रंग नहीं है, ये सात रंगों का एक समूह है। यदि सभी सात रंगों को एक अनुपात में मिलाकर घुमा दिया जाए तो वो श्वेत रंग बन जाता है। वैसे ही सात रंग सातों गुणों के साथ जुड़े हुए हैं और परमात्मा इन सातों रंगों का सागर है। बस वही सात रंग हमारे अंदर भी हैं जिनसे हमारी आत्मा बनी हुई है। आज हमारी आत्मा का रंग धूमिल पड़ गया है, अर्थात् उसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, भय रूपी गंदे रंग या चित्र भर गये हैं। इन गंदे चित्रों को निकालने हेतु हमें अपने आपको परमात्मा के रंग से रंगना होगा, पवित्र बनाना होगा, तभी जाकर हमारे अंदर वो सारे रंग जो परमात्मा के हैं, वो सब आ जायेंगे और हम भी लोगों को परमात्मा की तरह दिखने लग जायेंगे। इस होली पर हम सभी को उस परमात्म रंग में रंगने के लिए खुद को दृढ़ प्रतिज्ञ बनाना होगा। अपने आपको बार-बार याद दिलाना होगा कि होली पवित्र बनने का एक संकल्प है, एक एहसास है। इस होली में हम परमात्मा के होकर ही रहेंगे।

अब बात आ गई है कि हम क्या देखें और क्यों देखें। आपको हम बताना चाहेंगे कि प्रत्येक चित्र, प्रत्येक रंग के अंदर एक ऊर्जा होती है और वो ऊर्जा बहुत तीव्रता से हमारे मन को प्रभावित करती है, और ये चित्र जितनी बार हम देखते हैं, उतनी बार हम नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं। बात है हमें या हमारे मन को ट्रेनिंग देने की, इसीलिए शायद भक्तिमार्ग में जी गीत बने, उन गीतों में था कि हे परमात्मा मुझे अपने रंग में रंग दो।

वर्तमान विश्व की ज़रूरत क्या

अगर पूरे विश्व को एक लाइन में समेटना चाहें तो कह सकते हैं कि सभी आज भयभीत हैं, कोई किसी कारण से, कोई किसी कारण से। कोई मन की अशांति से चिल्ला रहा है, कोई भूख से चिल्ला रहा है, कोई परिवार की समस्या से चिल्ला रहा है, कोई एक-दूसरे से भयभीत होकर चिल्ला रहा है। चिल्लाने का कारण क्या है, शायद ताकत की कमी। यहाँ कोई शारीरिक ताकत की बात नहीं हो रही है, यहाँ पर बात मानसिक ताकत की है जो आज बिल्कुल खो चुकी है।

मनुष्य आज भयभीत है तो कारण उसका सिर्फ ये है कि वो अपने भविष्य को लेकर आश्वस्त नहीं है। और होगा भी कैसे, क्योंकि आज इतनी सारी विकराल समस्याएं और समस्याओं का समाधान देने वाला कोई नहीं। चाहे हम कितने भी बैंक बैलेंस बना लें, चाहे कितने ही सुख साधन के सामान खरीद लें, फिर भी डर रहे हैं, उलझन में हैं, क्योंकि ये सारे शरीर को आराम देने हेतु हैं, इससे हमारा मन तो अशांत ही रहता है। अगर मनुष्यों के मन की व्यथा को बहुत ध्यान से समझा जाए तो हम कह सकते हैं कि साधन तो हैं, लेकिन वे अल्पकाल के लगते हैं, सम्बंध तो हैं लेकिन उन सम्बंधों में अपनापन नहीं है, सभी अपने आप में जी रहे हैं।

कोई भूख से चिल्ला रहे हैं, कोई मन की अशांति से चिल्ला रहे हैं, कोई टैक्स से चिल्ला रहा है, कोई कुर्सी की हलचल से चिल्ला रहा है, यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी पढ़ाई के बोझ से चिल्ला रहे हैं। यह चिल्लाना आखिर इतना क्यों है, क्योंकि उनमें कोई भी चीज़ में संतुष्टता नहीं है, सोचते हैं ये भी कर लूं तो शांति, यह प्राप्त कर लूं तो शांति, लेकिन शांति मिल नहीं पा रही है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही है कि वो जो कुछ कमा रहा है, या जितने भी काम कर रहा है, उसका सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि वो सुख शांति से जीये, लेकिन जी ही नहीं पा रहा है। आज सभी सहारा ढूंढ रहे हैं। एक तरह से कहें तो सब कार्य को धक्के से चला रहे हैं। सब बातों में यही सोचते हैं कि ये सब तो चलना ही है। अगर इसको साधरण भाषा में कहें कि जबतक हर कार्य में कोई न कोई साधन का पहिया न लगे तब तक कोई कार्य नहीं चलता। तो इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि कोई चिल्ला रहा है, कोई चला रहा है।

जिस प्रकार आर्टीफिशियल दुनिया में कोई हमें बड़ी चीज़ मिल जाये तो छोटी चीज़ ऑटोमेटिकली छूट जाती है। उदाहरण के लिये यदि आपको एक्सचेंज ऑफर में बाईक के बदले होंडा सिटी कार मिल रही हो तो आप देंगे कि नहीं देंगे, हमारे हिसाब से तो बदल ही लेंगे। वैसे ही अध्यात्म की दुनिया में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। मनुष्यों के पास अल्पकाल के बहुत साधन हैं, सुख-सुविधाएं हैं, उसे वो छोड़ नहीं पा रहा है, उसी में सुख की तलाश कर रहा है। जब उसे वह छोड़ना चाहता है, उसे दर्द होता है, क्योंकि उसे छोड़ने से अटैचमेंट है। अगर कोई चीज़ अपने आप छूट जाती है तो उस वैराग्य को स्वाभाविक वैराग्य कहेंगे। अभ्यास और वौराग्य में शायद यही फर्क है कि जितना हम इन चीज़ों को छोड़ने का अभ्यास करेंगे तो वैराग्य स्वतः आ जायेगा, छोड़ना नहीं पड़ेगा, छूट जाएगा।

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि छोड़ने हेतु हमें सत्य ज्ञान की आवश्यकता है, समझ की आवश्यकता है और वह समझ यह है कि ये सारे साधन शरीर से सम्बंध रखते हैं, आत्मा को कुछ और चाहिए। और वो कुछ और कुछ नहीं, बस शांति, गहरी शांति, जिससे निकलने का मन नहीं करे। आज बहुत कर लिया सबने दूसरों पर भरोसा, दूसरों पर ऐतबार, मन हल्का करने के लिए दूसरों से बातचीत, लेकिन परिणाम दुःख ही रहा। अभिप्राय यह है कि आज हर आत्मा डिस्चार्ज है, तकलीफ में है, परेशान है, वह खुद ही जब अशांति में है तो दूसरों को कैसे देगी! ये बातें हम अपने अनुभव से आपको बता रहे हैं कि पहले हमें भी इन बातों का एहसास नहीं था, हम भी शांति व शक्ति दूसरों से लेने की कोशिश करते थे, लेकिन जब परमात्मा ने हमें बताया कि आप खुद एक टॉवर ऑफ पीस और टॉवर ऑफ लव हो तब हमें पता चला कि हम इतने शक्तिशाली हैं और शांति की तलाश कर रहे हैं स्थूल साधनों में। हमारा भविष्य सुनिश्चित करने के लिए और हमको भयमुक्त करने हेतु परमात्मा ने हमको सत्य ज्ञान दिया कि तुम्हारा भविष्य बहुत ही उज्ज्वल। परमात्मा कहते कि यदि आप सुख शांतिमय दुनिया चाहते हो तो सबसे पहले सत्य ज्ञान के आधार से अपने आपको इस शरीर से अलग आत्मा समझो और उसकी तरंगों से, हरेक आत्मा को यह एहसास होगा कि हम भी ऐसा कुछ करें। भविष्य का भय आपको कभी सतायेगा नहीं, क्योंकि वो सुनिश्चित है। वो करना कैसे है, उसका एक उदाहरण निम्नवत है। आपने एक सैंड वॉच देखी होगी, जिसका उपयोग समय को जानने हेतु पुराने लोग करते थे, जब घड़ियाँ नहीं थीं। कहने का भाव यह है कि उसमें बीच का भाग पतला होता है और ऊपर और नीचे का भाग समान होता है। अगर बालू को ऊपर डाल दिया जाए तो जितनी देर में वो पतली नली से नीचे आता जाता है, धीरे-धीरे जब पूरा ऊपर का भाग खाली हो जाता है तो एक घण्टा पूरा माना जाता है। ये उदाहरण हम आपको इसलिए दे रहे हैं कि यदि ऊपर के भाग को पास्ट मान लिया जाए और नीचे के भाग को फ्यूचर मानें तो बालू के गिरने की प्रक्रिया वर्तमान से ही जा रही है। यदि इसको सामान्य भाषा में समझना चाहें तो हम कह सकते हैं कि जब भी कोई दुःख की बात आती है तो हमेशा वो पीछे की होती है, या बीती हुई बात होती है, लेकिन उसे सोचते कब हैं, `अभी'। उसी प्रकार जिस बात से हमें डर लगता है वो होती हैं भविष्य की बातें, लेकिन उसको सोचते कब हैं, `अभी'। अर्थात् वर्तमान में। तो जो कुछ हो रहा है, अभी हो रहा है, चाहे भविष्य का, चाहे भूत का। तो हमें खुश रहना है तो अभी, दुःखी रहना है तो भी अभी, तो हम अभी ही सब क्यों नहीं कर लेते हैं, इंतज़ार क्यों कर रहे हैं, खुश ही रह लो ना। और वो अभी, अभी और अभी।

हम कह सकते हैं कि जब भी कोई दुःख की बात आती है तो हमेशा वो पीछे की होती है, या बीती हुई बात होती है, लेकिन उसे सोचते कब हैं, 'अभी'। उसी प्रकार जिस बात से हमें डर लगता है वो होती हैं भविष्य की बातें, लेकिन उसको सोचते कब हैं, 'अभी'। अर्थात् वर्तमान में। तो जो कुछ हो रहा है, अभी हो रहा है, चाहे भविष्य का, चाहे भूत का। तो हमें खुश रहना है तो अभी, दुःखी रहना है तो भी अभी, तो हम अभी ही सब क्यों नहीं कर लेते हैं, इंतज़ार क्यों कर रहे हैं, खुश ही रह लो ना। और वो अभी, अभी और अभी।

सेंधवा-म.प्र.। गणतंत्र दिवस पर जूनियर चेम्बर्स इंटरनेशनल द्वारा ब्र.कु. छाया को आध्यात्मिक सेवाओं के लिए सम्मानित करते हुए अध्यक्ष शिव पटेल, उपाध्यक्ष गुलशन शर्मा, संरक्षक साधना राजपाल एवं सदस्यगण।

वलसाड-गुज.। सरकारी अधिकारियों के लिए आयोजित ट्रेनिंग प्रोग्राम में 'बिल्डिंग टीम स्पीरिट' विषय पर अपना वक्तव्य देने के पश्चात् सरकारी अधिकारियों के साथ ब्र.कु. रोहित।

भोपाल। 'अखिल भारतीय बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. अवधेश, अतिथिगण व ब्र.कु. बहनें।

भिलाई नगर। 'टच द लाईट' कार्यक्रम में बच्चों का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में बायें से दायें ब्र.कु. स्नेहा, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. तारिका व ब्र.कु. प्राची।

नवसारी-गुज.। रोट्री आई इंस्टीट्यूट व ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से आयोजित 'आँखों के लिए मुफ्त चिकित्सा कैम्प' मोतिये का ऑपरेशन तथा चश्मे की प्राप्ति कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ग्राम सरपंच हर्षद भाई पटेल, केजल सार्वजनिक हॉस्पिटल प्रमुख ओमप्रकाश अग्रवाल, लायन्स क्लब प्रमुख श्याम सुंदर घोडेला तथा रिटायर्ड एक्ज़ीक्युटिव चीफ डायरेक्टर जी.ई.बी. गोविंद भाई पटेल।

रतलाम-म.प्र.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए ब्र.कु. सीमा व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

चिपलून-महा.। एस.ई.बी. में 'स्वच्छ स्वस्थ स्वर्णिम भारत व युवा सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. शिल्पा व अन्य।

ग्वालियर। आई.टी.एम. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन में 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. नीता, ब्र.कु.सुनीता व ब्र.कु. प्रहलाद।

इंदौर। गणतंत्र दिवस के अवसर पर शहर के बीचोबीच रीगल तीराहे पर इंडिया गेट की प्रतिकृति पर अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के पश्चात् समूह चित्र में संस्था सेवा सुरभि के अध्यक्ष ओम प्रकाश नरेडा, उद्योगपति कमल कलवानी, समाज सेवी मुकुंद, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. उषा व अन्य।

राजनंदगांव-छ.ग.। 'अलविदा तनाव शिविर' में दीप प्रज्वलित करते हुए महापौर मधुसुदन यादव, समाज कल्याण बोर्ड की चेयरमैन शोभा सोनी, नगर पालिका खैरागढ़ की नवनिर्वाचित अध्यक्ष मीरा चोपड़ा, दै.दावा के संपादक दीपक बुद्धदेव, ब्र.कु. पूनम एवं ब्र.कु. पुष्पा।

नवी मुम्बई-कोपरखैरणे। फादर जैसन को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. प्रीति, क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक समीति के सभापति व नगरसेवक प्रकाश मोरे तथा ब्र.कु. नीलम।

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता,मुख्यालय संयोजिका,महिला प्रभाग, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. संगीता,दिल्ली, ब्र.कु. पूजा,फरीदाबाद, प्रो. कमल दीक्षित, शिक्षा विभाग की पूर्व डायरेक्टर प्रमिला मैनी, डॉ. राखी तिवारी, पब्लिक रिलेशन असिस्टेंट डायरेक्टर करुणा राजोरकार, शासकीय परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण व्याख्याता डॉ. अभिलाषा दूबे, प्रो. अल्पना तिवारी व अन्य गणमान्य जन।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। 'विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं नीलम चन्द्रा बहन, नव ज्योति नशामुक्ति केन्द्र के डॉ. एन.के. सरकार व अन्य।

छत्तरपुर-म.प्र.। केन्द्रीय विद्यालय में 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. पूजा, जिला महिला सशक्तिकरण अधिकारी उदल सिंह ठाकुर व अन्य।

एक को न जानना, और होते कन्फ्यूज़...

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

- गतांक से आगे...

कुछ समय पहले जब मैं अमेरिका गयी, तो एक बहन आकर के मुझे बताने लगी कि मेरा बेटा पंद्रह साल का है। लेकिन जब भी मैं उसको कहती हूँ कि बेटा मंदिर चल, तो उसका पहला सवाल यही होता है कि हिन्दुओं में इतने भगवान क्यों हैं? क्रिश्चन में गॉड क्यों है? वो माँ उसको कहती है बेटा ये सब भगवान हैं। तो कहता है सब भगवान नहीं हो सकते, भगवान एक होना चाहिए। इसलिए जब माँ उसको कहती है बेटा चल मंदिर तो वो कहता है, मैं मंदिर जाने से कनफ्यूज़ हो जाता हूँ। कहाँ अपने मन को एकाग्र करूं? किसमें एकाग्र करूं? मुझे लगता है वहाँ हमारा समय नष्ट हो जाता है। मैं अपना टाइम वेस्ट करने के लिए मंदिर में क्यों आऊं, वो बच्चा अपनी माँ से कहता है कि इससे अच्छा तो मैं चर्च में जाऊं, तो कम से कम वहाँ एक गॉड है, जहाँ मैं अपने मन को एकाग्र करूं। वो माँ मुझे कहने लगी कि मेरा बेटा चर्च में जाता है मंदिर में नहीं जाता है। मुझे ये हर्ज़ा नहीं कि वो चर्च में क्यों जाता है? लेकिन ये दु:ख ज़रूर है कि वो मंदिर क्यों नहीं जाता? कल को कहीं आपके बच्चे ने ये सवाल पूछ लिया, तो क्या आपके पास उसका कोई उत्तर है कि हिंदुओं में इतने भगवान क्यों हैं? क्रिश्चन में एक गॉड क्यों है? मुसलमानों में एक अल्लाह क्यों है? आपके पास जवाब है? भावार्थ ये है कि कहीं हमारे अंदर ही अज्ञानता है, जिस अज्ञानता के कारण हम आज के पीढ़ी को यथार्थ वैज्ञानिक व्याख्या नहीं दे पाते हैं। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों के पास इतना सुंदर साइंस था, मेडिटेशन का भी बहुत सुंदर साइंस था। जो कुछ भी उन्होंने किया उसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण था। लेकिन क्योंकि उस वक्त आत्माओं में वो पात्रता नहीं थी। इसलिए उन्होंने कुछ भी समझाया नहीं। लेकिन आज की पीढ़ी इतनी समझदार है कि उसको हर बात में एक लॉजिकल उत्तर चाहिए। अगर हमें पता होगा तो हम अपने बच्चे को गाईड कर सकेंगे, इसलिए ज़रूरी है कि पैरों को क्यों मोड़ना चाहिए, हाथों को क्यों जोड़ना चाहिए क्योंकि इस सर्किट को बंद करना है। जब सर्किट बंद हो जाती है तो फ्लो ऑफ एनर्जी नैचुरल रूप से मिलती है।

तीसरा द्वार है आँखें। आँखें तीसरा द्वार क्यों है? क्योंकि मनुष्य की मनोवृत्ति में क्या चल रहा है, वह वायब्रेशन आँखें रिले करती हैं। यह कॉन्सटेंट होती रहती है। किसी व्यक्ति से, कोई आपको अनुभव न भी हो, लेकिन उसकी आँखों को देख कर कहेंगे ये व्यक्ति बड़ा गुस्से वाला लग रहा है। किसी व्यक्ति की आँखों को देखकर कहेंगे इनकी आँखों में बहुत प्यार भरा हुआ है। आँखें लगातार प्यार के प्रकम्पन फैला रही है। इसलिए ये दो द्वार को बंद करो लेकिन तीसरा द्वार बंद नहीं करना है क्योंकि अगर तीनों द्वार बंद हो गये तो अंदर की निगेटिव ऊर्जा को बाहर निकालेंगे कैसे? परमात्मा से पॉज़ीटिव ऊर्जा को लेंगे कैसे? इसलिए एक द्वार खुला रखना है। भगवान ने अर्जुन को कहा कि आसन बिछाए दृढ़तापूर्वक सीधा बैठकर के मन इंद्रियां तथा कर्मों को संयम में रखकर के अर्थात् इंद्रियों को जितना एकाग्र रखेंगे उतना, मन की एकाग्रता को सहज विकसित कर सकेंगे। अगर शरीर ही हिलता-डोलता रहेगा, तो ये बताता है कि मन अंदर कितना डोल रहा है। इसलिए जितना अपनी इंद्रियों को सीधा बैठकर के संयम पूर्वक एकाग्र करेंगे उतना मन, बुद्धि और दृष्टि तीनों को एकाग्र करना और हृदय में शुभ भावना को जागृत करना, ये योग में बैठने की विधि है ।

इसलिए जब लोग मंदिर जाते हैं ना तो उसको पूछो कि कहाँ जा रहे हो। तो क्या कहते हैं? दर्शन करने जा रहे हैं। लेकिन मंदिर में जाने के बाद आँखें बंद कर लेते हैं। भगवान की आँखें खुली हैं, तो किसने किसका दर्शन किया? फिर तो ये कहना चाहिए ना कि दर्शन कराने जा रहे हैं। हमने तो दर्शन किया ही नहीं। दर्शन करना माना दर्शाना, जीवन में उसको उतारना है। जो सामने मूर्ति है उसके अंदर कितनी निर्मलता है, कितनी पवित्रता है, कितनी सौम्यता है। उसको दर्शन करके, अपने जीवन में अनुभव ज़रूर करना कि वो निर्मलता, वो पवित्रता, वो सौम्यता को अपने जीवन में ले आयें। इसलिए दर्शन करो। आँखें बंद नहीं कर दो, नहीं तो वो एनर्जी आपको मिलेगी नहीं। हाथ भी जोड़ दिए, आँखें भी बंद हो गयी, पैरों को भी मोड़ दिया, तो वो पवित्र ऊर्जा मिलेगी नहीं। इसलिए मेडिटेशन में बैठने की यथार्थ विधि है कि आँखों को खुला रखना। - क्रमशः

सफलता का रहस्य...

- पेज 2 का शेष

ने कहा है कि - पैसा जो कुछ खरीद सकता है, उसे बहुत कुछ अर्जित करना और पैसा जो खरीद न सके वो सभी प्राप्त करना।

नॉर्मन विन्सेंट पीले ने 'नज़र बदल कर नये इंसान बनो' इस किताब में एक प्रसंग में लिखा है कि - हेनरी नदी किनारे एक बोध का निर्माण कर रहा था। उसी दौर में ज़ोरदार तूफान शुरु हुआ और पानी के पूर के कारण उनके मशीन कीचड़ में डूब गए। किये काम को पानी ने बरबाद कर दिया। जब पानी कम हो गया तब हेनरी नुकसान का अंदाज़ा करने गया तो घटना स्थल पर देखा कि मज़दूर लोग उदास बैठे थे, कीचड़ में डूबे मशीन को निहारते हताश होकर देख रहे थे।

हेनरी ने मज़दूरों को पूछा: ``आप लोग इतने उदास क्यों हो?''

उन्होंने कहा: ``क्या आपको कुछ भी दिखाई नहीं देता। अपने सारे मशीन कीचड़ में डूब गये हैं।''

``कौन सा कीचड़? हेनरी का प्रश्न।''

मजदूरों ने कहा: ``कौन सा कीचड़! चारो ओर कीचड़ और सिर्फ कीचड़ ही है।''

``ऐसा हेनरी ने हंसते-हंसते कहा, मुझे तो कहीं भी कीचड़ दिखाई नहीं देता।''

मज़दूरों ने पूछा : ``लेकिन आप ऐसा विधान कैसे कर सकते हो?'' हेनरी ने कहा : ``कारण कि मैं आकाश की ओर देखता हूँ और ऊपर आकाश में कहीं भी कीचड़ दिखाई नहीं देती। वहाँ तो सूरज चमक रहा है। सूर्य तीव्र रूप से चमकेगा तो दुनिया की कोई कीचड़ उसका सामना नहीं कर सकेगी। कीचड़ जल्द ही सूख जाएगी और आप अपने मशीनों को एक बार बाहर निकाल सकेंगे। और फिर से काम शुरु कर सकेंगे। सार रूप में यही है कि दृष्टि नीची रखेंगे तो कीचड़ दिखाई देगी और असफलता का अहसास होगा और स्वयं ही आप पराजय के विचारों का निर्माण करेंगे। आशावादी तस्वीर के साथ प्रार्थना और श्रद्धा साथ होगी तो सफलता निश्चित है। कार्य में सफल या विजयी बनने की तरकीब –

1. सदा सक्रिय रहना, जागृत रहना, भीड़ से आगे चलने की कोशिश करना।
2. लक्ष्य ऊँचा रख, ईमानदारी रख, धैर्यपूर्ण काम करते रहना।
3. गहरे उतरकर अंदाज प्राप्त करो और ऊँचाई की ओर अग्रसर हो जाओ।
4. बचत करो, भूतकाल को भूल जाओ, वर्तमान का उपयोग करो, उज्जवल भविष्य में विश्वास रखो।
5. घबराये बिना जीवन में उद्देश्यलक्षी रहो, परमात्मा की कृपा का सम्मान करो।
6. विजय प्राप्ति का दृढ़ संकल्प कर अंत तक संघर्ष करते रहो।

शांतिवन। पुण्यभूषण फाउण्डेशन,पुणे द्वारा दादी जानकी को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए मिस्टर वर्ल्ड 2013 सुहास खामकर। साथ हैं ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. नंदकिशोर, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. दिलीप मिस्किन, ब्र.कु. भरत व ब्र.कु. सुनंदा।

अरेरा कॉलोनी-भोपाल। रिलायन्स ट्रेन्ड्ज़ डी.बी. मॉल में 'इनहेंसिंग माइंड पावर' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रानी,जीनियस वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर,आयरन क्वीन, ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. दीपेन, श्रीमती चन्द्रा,मैनेजर,रिलायन्स ट्रेन्ड्ज़ व स्टाफ।

कथा सरिता

चार कीमती रत्न...

एक वृद्ध संत ने अपनी अंतिम घड़ी नज़दीक देख अपने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा: मैं तुम बच्चों को चार कीमती रत्न दे रहा हूँ, मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इन्हें सम्भाल कर रखोगे और पूरी ज़िन्दगी इनकी सहायता से अपना जीवन आनंदमय तथा श्रेष्ठ बनाओगे।

पहला रत्न है: 'माफी'

तुम्हारे लिए कोई कुछ भी कहे, तुम उसकी बात को कभी अपने मन में न बिठाना, और ना ही उसके लिए कभी प्रतिकार की भावना मन में रखना, बल्कि उसे माफ कर देना।

दूसरा रत्न है: 'भूल जाना'

अपने द्वारा दूसरों के प्रति किये गए उपकार को भूल जाना, कभी भी उस किये गए उपकार का प्रतिलाभ मिलने की उम्मीद मन में न रखना।

तीसरा रत्न है: 'विश्वास'

हमेशा अपनी मेहनत और उस परमपिता परमात्मा पर अटूट विश्वास रखना क्योंकि हम कुछ नहीं कर सकते जब तक उस सृष्टि नियंता के विधान में नहीं लिखा होगा।

परमपिता परमात्मा पर रखा गया विश्वास ही तुम्हें जीवन के हर संकट से बचा पाएगा और सफल करेगा।

चौथा रत्न है: 'वैराग्य'

हमेशा यह याद रखना कि जब हमारा जन्म हुआ है तो निश्चित ही हमें एक दिन मरना ही है। इसलिए किसी के लिए अपने मन में लोभ-मोह न रखना।

मेरे बच्चों जब तक तुम ये चार रत्न अपने पास सम्भालकर रखोगे, तुम खुश और प्रसन्न रहोगे।

ऐसा 'माँ' ही कर सकती है!

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया - `दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं।' सौदागर ने राजा से कहा - `महाराज - ये गायें माँ-बेटी हैं परंतु मुझे यह नहीं पता कि माँ कौन है व बेटी कौन - क्योंकि दोनों में खास अंतर नहीं है।'

मैंने अनेक जगह पर लोगों से यह पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ-बेटी की पहचान नहीं कर पाया।

बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहाँ पर अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा इसलिए मैं यहाँ पर चला आया - `कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए।'

यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे। मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की तरफ गया। उसने दोनों का बारी-बारी से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन माँ है और कौन बेटी...!

अब मंत्री बड़ी दुविधा में फंस गया, उसने सौदागर से एक दिन की मोहलत मांगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा। उसकी पत्नी इस बात को समझ गई।

उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सौदागर की बात बता दी।

यह सुनकर पत्नी मुस्कराते हुए बोली `अरे! बस इतनी सी बात है- यह तो मैं बता सकती हूँ।'

अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहाँ ले गया जहां गायें बंधी थीं। मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा- कुछ ही देर बाद उसने माँ व बेटी में अंतर बता दिया - लोग चकित रह गए।

मंत्री की पत्नी बोली- `पहली गाय जल्दी-जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुंह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया, ऐसा केवल एक माँ ही कर सकती है - यानि दूसरी वाली माँ है। माँ ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है - माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते हैं।

जीवन... न चला जाये

एक गिलहरी रोज़ अपने काम पर समय से आती थी और काम पूर्ण मेहनत तथा ईमानदारी से करती थी। गिलहरी ज़रूरत से ज़्यादा काम करके भी खुश थी क्योंकि उसके मालिक...जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वायदा कर रखा था।

गिलहरी काम करते करते थक जाती थी, तो सोचती थी कि थोड़ा आराम कर लूँ... वैसे ही उसे याद आता था - कि शेर उसे दस बोरी अखरोट देगा -गिलहरी फिर काम पर लग जाती।

गिलहरी जब दूसरे गिलहरियों को खेलते-कूदते देखती थी तो उसकी भी इच्छा होती थी कि मैं भी एन्जॉय करूँ।

पर उसे अखरोट याद आ जाता था, और वो फिर काम पर लग जाती।

शेर कभी-कभी उसे दूसरे शेर के पास भी काम करने के लिए भेज देता था, ऐसा नहीं कि शेर उसे अखरोट नहीं देना चाहता था, शेर बहुत ईमानदार था।

ऐसे ही समय बीतता रहा...

एक दिन ऐसा भी आया जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को दस बोरी अखरोट देकर आज़ाद कर दिया।

गिलहरी अखरोट के पास बैठकर सोचने लगी कि : अब अखरोट हमारे किस काम के? पूरी ज़िन्दगी काम करते-करते दाँत तो घिस गये, इसे खाऊँ कैसे!

उमरेड-महा.। व्यसनमुक्त समाज बनाने में अमूल्य योगदान के लिए केन्द्रीय यातायात मंत्री नितिन गडकरी द्वारा 'महात्मा गांधी व्यसनमुक्ति गौरव सेवा पुरस्कार 2015-2016' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. अशोक, डॉ. सचिन परब, ब्र.कु.रेखा व अन्य।

गोवा। प्रसिद्ध वैज्ञानिक रघुनाथ मशेलकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेखा।

जशपुर नगर-पुरानी टोली(छ.ग.)। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण रैली' के समापन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रबल प्रताप सिंह जुदेव, हिरू राम निकुंज, ब्र.कु. चित्रा, ब्र.कु. राधिका व अन्य।

अतुल-गुज.। व्यापारी वर्ग के लिए आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. रोहित, ब्र.कु. रंजन, ब्र.कु. जिज्ञासा व श्रीराम डेयरी के मालिक नगिन भाई।

अलिराजपुर-म.प्र.। 'खुशनुमा जीवन एवं राजयोग अनुभूति शिविर' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. माधुरी, ब्र.कु. अरुण, उद्योगपति मदन जी, ब्र.कु. नारायण, ओमलता बहन एवं संगीता बहन।

धमतरी-छ.ग.। ब्र.कु. ओमप्रकाश भाईजी की श्रद्धांजलि सभा में मंच पर उपस्थित हैं दीपक लखोटिया,सम्पादक,प्रखर समाचार पत्र, दयाराम अग्रवाल,उद्योगपति, ब्र.कु. सरिता व अन्य।

कल्पना!!

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

> **मनुष्य की मंसा हमेशा कुछ नया करने की होती है। नया अर्थात् जो सबसे अलग हो, लेकिन उसकी शुरुआत वो ऐसे जगह से करता है जहां किसी का अंतर्विरोध नहीं होता, किसी तरह की कोई असमंजस वाली स्थिति नहीं होती। वो कहता कम है लेकिन मन में उसके लिए कल्पनाएं बहुत करता है। और यही कल्पनाओं का संसार उसे एक दिन सफल व असफल बना देता है।**

कल्पना अनंत आकाश में चारो तरफ फैलने वाली एक ऐसी तरंगें हैं जिसे रोक पाना इंसान के वश में नहीं है। अपनी इसी गति और वेग के कारण यह दृश्य-अदृश्य सभी लोकों का विहार करती है। मन की असीम ऊर्जा शक्ति और क्षमता के अनुरूप ही कल्पनाओं का निर्माण होता है। कल्पनाओं का ख्याल तो किया जा सकता है परन्तु उसे पूरा करना मुश्किल होता है। सुख और दुःख इन्हीं कल्पनाओं का परिणाम है। अगर कल्पना न हो तो सुख और दुःख दोनों नहीं होंगे। कल्पनाओं का सार्थक उपयोग सीख लिया जाए तो इसकी सार्थकता सामने लायी जा सकती है। बहुत सारे मनोविश्लेषकों का मानना है कि कल्पना शक्ति मनुष्य की एक दिव्य क्षमता है। इसके माध्यम से वो विराट चीज़ों को हासिल कर सकता है।

कल्पनाएं मन में उठने वाली ऐसी तरंगें होती हैं जिनको यदि क्रमबद्ध नहीं किया गया तो परिणाम बड़ा दुःखद होता है। आजकल मनुष्य के मन में ज़्यादातर नकारात्मक कल्पनाएं ही उठती हैं जिसका स्वरूप बड़ा ही दुःखद व डरावना हो जाता है।

मन में उठने वाली कल्पनाओं को यदि समय रहते ध्यान नहीं दिया गया या काट-छाँट नहीं की गई तो ये अपना एक नया संसार ही गढ़ लेंगी। बार-बार उठने वाली ये कल्पनाएं एक ठोस एवं दृढ़ आकार ले लेती हैं। जैसे यदि कोई स्वयं के प्रति यह कल्पना करके बैठे कि वो संसार का अति दुःखी व असहाय प्राणी है, इस संसार में उसे अपना कहने लायक कोई नहीं है, ऐसी कल्पना से व्यक्ति तो दुःख को ही

आमंत्रित कर रहा है ना। जो चीज़ है नहीं उसे बार-बार सोचना भी अपने आप को दुःख देना है। नकारात्मक कल्पनाएं करते-करते आज मनुष्य फोबिया का शिकार हो गया है। जिसमें बेवजह डर रूपी कल्पना डराती रहती है।

कल्पना शक्ति यदि मानवीय चेतना की दिव्य क्षमता के साथ जुड़ जाये तो उससे आश्चर्यजनक और अद्भुत चीज़ों का सृजन किया जा सकता है। कल्पनाओं के साथ बुद्धि का मिलना वैज्ञानिक एवं तकनीकि प्रगति के नये द्वार खोलता है। जब कल्पना को इमैजिनेशन से निकाल विज़ुअलाइज़ेशन की तरफ ले जाते हैं, तो वो विज़ुअलाइज़ेशन हमें एक स्थिर चित्त इंसान की श्रेणी में खड़ा कर सकता है। कल्पनाओं का स्तर देखकर ही किसी व्यक्ति, समाज के विकास की पहचान की जा सकती है। ऊँची कल्पना हो और जीवन शैली निकृष्ट हो, ये तो संभव नहीं है ना। भारत भूमि जब स्वर्ण युग सतयुग था, उन दिनों वहां के निवासी कैसा जीवन जीते थे, यदि उसे कल्पनात्मक रूप से लिया जाए तो हम कह सकते हैं कि वो एक अति श्रेष्ठ कल्पना होगी, जिसमें सभी लोग सार्थक जीवन जीते थे।

जीवन में विषय-विलास, राग-रंग की कल्पनाएं ज़हर बनकर घुलने लग जाती हैं, यहां से पतन एवं पराभव का अंतहीन सिलसिला चल पड़ता है। इससे अपार एवं असीमित ऊर्जा का क्षरण हो जाता है। आज की पीढ़ी को यदि देखा जाए तो पूरी पीढ़ी हमेशा भोग-विलास, गंदे गीत, चुटकुलों, गंदी फिल्मों को देखकर ऐसी कल्पनाएं करते हैं जो ऊर्जा के रूप में परिवर्तित होकर शरीर को क्षीण कर देती हैं। इसलिए आज के बच्चे पंद्रह साल के उम्र में ही पच्चीस साल के लगते हैं, सबके चेहरे का तेज और ओज खत्म हो गया, कारण नकारात्मक कल्पनाएं, भोग-विलासी कल्पनाएं। तो आइये हम सभी कल्पना को एक सकारात्मक रूप देकर सबके लिए एक ऐसा संदेश छोड़ें कि जब भी कोई कल्पना करे तो हमेशा श्रेष्ठ जीवन का करे।

मन की बातें
-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः जब मैं ज्ञान में आया तो मेरी पवित्रता प्रथम वर्ष में ही बहुत अच्छी हो गई थी। मुझे बीस वर्ष ज्ञान में हो गये हैं। अब अचानक अपवित्र संस्कार इमर्ज हो रहे हैं। मैं परेशान हूँ, ऐसा क्यों हुआ?

उत्तरः जब किसी भी आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान मिलता है और आत्मा इस नशे में रहने लगती है कि मुझे तो भगवान मिल गये। मन में ये उमंग भी रहता है कि मुझे पतित पावन शिव बाबा की आज्ञा पर चलकर पवित्र बनना है और पवित्रता की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो पवित्रता सरल लगती है। परन्तु जैसा आप जानते हैं कि यह अपवित्रता 63 जन्मों की है। किसी में ज्यादा है, किसी में कम। आत्मा तब तक पवित्र नहीं बन सकती जब तक उसे सर्वशक्तिवान की शक्तियां न मिले। सम्पूर्ण पवित्रता के लिए सम्पूर्ण योग होना आवश्यक है। योग का चार्ट चार घण्टे प्रतिदिन तो होना ही चाहिए। परन्तु अधिकतर ब्राह्मण यह योग की साधना नहीं कर पाते, इसलिए अपवित्रता दबी रह जाती है और बाह्य दूषित वातावरण के प्रभाव से या दूषित मनुष्यों के प्रभाव से वे संस्कार पुनः प्रकट होने लगते हैं। यही कुछ आपके साथ भी हुआ है। अतः अमृतवेले अच्छी साधना करो। पांच स्वरूपों का अभ्यास सुबह-शाम करो, भोजन की पवित्रता पर अधिक ध्यान दो व दिन में कई बार इस स्मृति में रहो कि मैं पवित्रता का सूर्य हूँ। परेशान होने की बात नहीं। याद रहे योग-साधना के बिना पवित्रता का सुख प्राप्त नहीं होगा।

प्रश्नः कृपया अष्ट रत्नों का स्पष्टीकरण कीजिए, ये आठ आत्माएं गद्दी पर बैठते हैं या ये सोलह आत्माएं हैं या चार युगल हैं?

उत्तरः हमारा यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय है, जिसका परम शिक्षक स्वयं ज्ञान का सागर है और इसमें चार विषय हैं -ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग, श्रेष्ठ धारणाएं व ईश्वरीय सेवा। इस पढ़ाई में जो आत्माएं पास विद ऑनर होती हैं उनकी संख्या आठ है। ये ही चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेते हैं।

ये आत्माएं ही सम्पूर्ण आत्माभिमानी अर्थात सम्पूर्ण योग-युक्त व सम्पूर्ण पवित्र तथा सम्पूर्णतया बाप समान बनती हैं। ये ही पहले चार युगल अर्थात् विश्व-महाराजन व विश्व महारानी बनती हैं, परन्तु पुनर्जन्म के बाद भी अपने टर्न पर इन्हें पुनः राज्य मिलता है। ये आठ सतयुग में राजा रानी बनते हैं, चाहे केन्द्र में चाहे राज्य में। सतयुग में भी एक केन्द्र होगा जिसके शासक को विश्व महाराजन कहेंगे बाकि आठ राजाई साथ-साथ ही चलेगी अर्थात् लगभग एक लाख के ऊपर एक राजा होगा। आपको ख्याल रहे कि पूरे सतयुग में सोलह से ज़्यादा गद्दी चलेगी क्योंकि एक राजा अपनी आयु का लगभग आधा समय ही राज्य करेगा, न कि 150 वर्ष। ये एक सौ पचास वर्ष तो उनकी आयु है। पूरे सतयुग में 108 आत्माएं केन्द्र व राज्यों में राज्य करेंगी। इन 108 आत्माओं में पहली 25 आत्माएं बहुत महान हैं।

प्रश्नः क्या अब के जोन इन्चार्ज स्वर्ग के राजा-रानी या विश्व महाराजन होंगे? क्योंकि हमारे यहां सभी की यही मान्यता है।

उत्तरः यहां सेवाओं में वास्तव में कोई पद नहीं होता। यहां तो सभी सेवाधारी हैं परन्तु कार्य सुचारू रूप से चले इसके लिए निमित्त पदों का सृजन किया जाता है। जिन्होंने सेवा में बहुत मेहनत की है व अनेक सेवाकेन्द्र खोले हैं, वे उनके संचालक हैं। कोई विशेष गुण, योग्यता या सेवा में अथक परिश्रम से ही आत्माएं सेवा की बड़ी ज़िम्मेदारी सम्भालती हैं। परन्तु सेवा के पद से भविष्य पद का सीधा सम्बन्ध नहीं है। कोई बिना पद के सेवाधारी भी विश्व महाराजन बन सकते हैं। इसमें पद नहीं, बल्कि स्थिति का महत्व है। ध्यान दें राजाई उन्हें ही मिलेगी, जिनमें - दूसरों की मात-पिता सम पालना करने के संस्कार होंगे। जो स्वराज्य अधिकारी बनते हैं, जिन्होंने कर्मेन्द्रियों के रसों को जीत लिया है। जो दिव्य बुद्धि सम्पन्न, मास्टर सर्वशक्तिवान व पवित्रता के श्रेष्ठ चरित्र से सम्पन्न हैं। जिनके द्वारा किसी न किसी तरह का सहयोग सबको मिलता है। जिनमें राजाई की रॉयल्टी है, चित्त शुभ-भावनाओं से भरा है तथा जो त्यागी व तपस्वी हैं तथा सदा ही दूसरों को आगे बढ़ाते हैं।

प्रश्नः वर्ष में तीन-चार बार अज्ञानियों के हाथ का खाना पड़ता है। तब मन में बहुत संकल्प चलते हैं, मन भारी हो जाता है। हम क्या करें?

उत्तरः इसे आपद्धर्म कहते हैं। क्योंकि आप गृहस्थ में व कारोबार में रहते हैं इसलिए ऐसी बातें आपके सामने आती हैं। आप भारी न हों। भोजन जब सामने आये, उसे दृष्टि देते हुए लगभग इक्कीस बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। इससे भोजन पवित्र हो जाएगा और उसका आप पर निगेटिव प्रभाव नहीं पड़ेगा।

प्रश्नः मेरी खाने-पीने में बहुत आसक्ति है। मुझे हर समय नया-नया खाना चाहिए। मुझे सेंटर में भी रहना है...उसकी भी विधि जानना चाहती हूं व इस खान-पान की आसक्ति से भी मुक्त होना चाहती हूँ।

उत्तरः आपको सेंटर पर रहना हो तो त्याग भरा जीवन अपनाना ही पड़ेगा। आत्मा को यदि आप अलौकिक भोजन से तृप्त करने लगें तो सूखा भोजन भी आपको आनंदित करेगा। पेट को क्या पता कि क्या आ रहा है। ये स्वाद तो जीभ तक ही सीमित है। आपको समर्पित होना है तो प्रतिदिन चार घण्टे योग करो। आप अभ्यास करो कि मैं आत्मा कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ -इससे चित्त अनासक्त होता जायेगा। साथ ही साथ मन को भी तैयार करो कि सब कुछ खाना है और जीभ के रस को छोड़ना भी है। योगी कभी भी रसों के वश नहीं होते। योगियों के वश माया रहती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें

For Cable & DTH +91 8104777111 TATA Sky 192 airtel 686 videocon 497 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83°E

DD डायरेक्ट फ्री दूरदर्शन DTH पर GOD TV में और DISH TV पर भी फ्री पीस ऑफ माइंड चैनल शाम 7.30 से रात्रि 10.00 बजे तक देख सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104-777111/9414151111

गांव के 'हीरो' को बदलने का एक भागीरथ प्रयास

ब्र.कु. देवसिंह, हमीरपुर।

जैसी इस संस्था की थॉट प्रोसेस है, मैं भी ऐसा ही सोचता था, इसलिए मुझे बहुत अच्छा लगा। जो चीज़ मेरे अंदर थी, मुझे वही मिल गई। यहाँ आने के बाद इस यौगिक खेती के प्रोसेस को और अच्छी तरह जानने, समझने का मौका मिला। आज अधिकतर किसानों की ये प्रवृत्ति बन गई है कि कम जगह और कम पैसे में अधिक उत्पादन। ऐटीट्यूड को चेंज करना होगा, अब गांव वालों के अंदर ये विचार विकसित किये जायेंगे, उन्हें इस बात के लिए जागरुक किया जाएगा कि जो तुम्हारी लिविंग है वो ज़्यादा बेहतर है।

प्रश्न: आप इस संस्था के सम्पर्क में कैसे आए और कब जुड़े?

उत्तर: मुझे करीब एक वर्ष हो गया है इस संस्था से जुड़े। मेरी युगल की इसमें गहरी रुचि थी। वे इस संस्था से पहले से ही जुड़ी हुई थीं। उनकी ही प्रेरणा थी कि राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करना है। फिर हम सेवाकेन्द्र पर गये और कोर्स किया। हमें जो यहाँ पर समझ में आया तो उसका मुख्य पहलू यही समझ में आया जो ये गैप है और इस गैप को पूरा करने में ये संस्था किस तरह से सहायक हो सकती है। तो उसका मुख्य और मज़बूत पहलू यही था कि इसकी दिशा आध्यात्मिक है, वो उस गैप को पूरा करती है। इसी भावना के साथ मैं इस संस्था से जुड़ गया और एक वर्ष से मैं इस विश्व विद्यालय का एक विद्यार्थी हूँ।

प्रश्न: आप रोज़ाना सेवाकेन्द्र जाकर इस ईश्वरीय शिक्षा का लाभ लेते हैं?

उत्तर: जब मैं फील्ड में होता हूँ तो ये चीज़ें मुझे उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, लेकिन मैं यहाँ लखनऊ में रहता हूँ तो मैं रोज़ाना सेवाकेन्द्र पर जाता हूँ और इस पढ़ाई में रेग्युलर रहता हूँ और पीस ऑफ माइंड चैनल से सारे आध्यात्मिक कार्यक्रमों का लाभ लेता हूँ।

प्रश्न: आपका पूरा नाम, आपकी लौकिक पढ़ाई और अपने कार्य के बारे में बतायें।

उत्तर: हमीरपुर जिले में एक गांव है नदेरा, जहां पर मेरा जन्म हुआ। पिताजी एक किसान थे। मेरा नाम है। मैंने ग्रैजुएशन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से किया। इसके बाद आगे की पढ़ाई और आई.ए.एस. की तैयारी के लिए मैं दिल्ली में रहा। इसके बाद मैंने पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से एम.एम. किया। फिर मैंने भारत के अधिकतर राज्यों में भ्रमण किया, ऑर्गेनिक खेती करने वाले लोगों से भी मिला और इसके बारे में बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त की। वर्तमान समय मैं खुद अपनी 21 एकड़ में ऑर्गेनिक खेती कर रहा हूँ, इसका उद्देश्य यही है कि इसे देखकर दूसरे लोग भी इससे प्रेरणा लेंगे और वे भी ऐसा करने को तैयार हो सकेंगे।

प्रश्न: ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाया जा रहा 'शाश्वत यौगिक खेती' का कॉन्सेप्ट आपको कैसा लगा और इसके बारे में आप अपनी क्या राय रखते हैं?

उत्तर: जैसी इस संस्था की थॉट प्रोसेस है, मैं भी ऐसा ही सोचता था, इसलिए मुझे बहुत अच्छा लगा। जो चीज़ मेरे अंदर थी, मुझे वही मिल गई। यहाँ आने के बाद इस यौगिक खेती के प्रोसेस को और अच्छी तरह जानने, समझने का मौका मिला। आज अधिकतर किसानों की ये प्रवृत्ति बन गई है कि कम जगह और कम पैसे में अधिक उत्पादन। और ज़िम्मेवारी दूसरों पर डालना और अपने आप को हमेशा सही ही समझना। ऐसे हालात को केवल आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही ठीक किया जा सकता है।

प्रश्न: यहाँ जो मेडिटेशन की विधि बताई जा रही है वो कितनी लाभदायक है, इसके बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर: अगर मैं सार में कहूँ तो ये मेडिटेशन हमारी सारी प्रॉब्लम को हमसे अलग कर देता है। जब तक हम इसे गलत विधि से समझते हैं तब तक ऐक्शन-रिऐक्शन होता रहता है। जो चीज़ें घटती हैं उनमें हम रिऐक्ट करते रहते हैं। लेकिन राजयोग द्वारा इन चीज़ों को समझने के बाद हमारे सारे रिऐक्शन्स खत्म हो जाते हैं। हम दूसरे को ज़िम्मेवार या दोषी मानना छोड़ देते हैं। ये एक जागृति है, अगर हम लगातार इसके साथ जुड़े रहते हैं तो दु:खी होने के अवसर लगभग समाप्त ही हो जाते हैं, ऐसे कारण खत्म हो जाते हैं।

प्रश्न: ऑर्गेनिक खेती के साथ यौगिक खेती का जो कॉन्सेप्ट है, आप भी इस क्षेत्र में कार्य करते हैं तो आप इसे कितना महत्व देते हैं?

उत्तर: इंसान जब किसी चीज़ के बारे में जानता है तो वो केवल उस भाग को लेकर चलता है, लेकिन वो एक विशेष पार्ट नहीं है, वो सबकुछ जुड़ा हुआ है। ऐसा कुछ हो ही नहीं सकता कि डिसोसिएट होकर आप एक सरटेन पार्ट को देखो। जैसे स्वाइल, प्लांट, एनिमल्स और ह्यूमन बीइंग, हम कहें कि हम स्वाइल से इसे ठीक करना चालू करें और लास्ट तक आ जाते हैं, ये ठीक है। उसी प्रकार अपना सुधार नाभि से नहीं मन से करें तो सब अपने आप ही ठीक हो जाएगा। जो ऑर्गेनिक सिस्टम है, अगर शब्दों में कहें तो वो भी लिविंग चीज़ की ही बात करता है। अगर किसानों के बीच भी इन चीज़ों को किया जाएगा तो वो वहां भी ज़रूर आएगा। वो चीज़ें धीरे-धीरे उनकी तरफ जाए-ंगी ही।

प्रश्न: आप किसानों में ऐसी जागरुकता लाने में व इस क्षेत्र के लिए क्या करना चाहेंगे?

उत्तर: मैं इस चीज़ में आगे तो बढ़ ही रहा हूँ। मेरा तो एक ही मात्र उद्देश्य है और था भी, क्योंकि मैं जिस बैकग्राउण्ड से आया था वो खेती का ही रहा है। मेरे पिता भी किसान ही थे। आज के समय में भौतिक जीवन में हमारा आचार-व्यवहार, हमारी महत्वाकांक्षाएं जिस तरह से बन गई हैं, जाने-अनजाने हम इस तरह से ये चीज़ें कर रहे हैं। हमने बहुत सी दूसरी चीज़ों का बोझ एडॉप्ट कर लिया है, और बड़ी तेज़ी से एडॉप्ट करते चले जा रहे हैं। उसकी वजह से वो जीवन चला गया है। ऐटीट्यूड को चेंज करना होगा, अब गांव वालों के अंदर ये विचार विकसित किये जायेंगे, उन्हें इस बात के लिए जागरुक किया जाएगा कि जो आपकी लिविंग है वो ज़्यादा बेहतर है।

प्रश्न: इस संस्था के साथ आपका कोई विशेष अनुभव जुड़ा हो तो हमें बताएं।

उत्तर: मैंने आज तक टी.वी. पर ही ब्रह्माकुमारीज़ के भाई बहनों के प्रवचन सुने थे, लेकिन यहाँ मैंने जब ये सबकुछ सामने देखा सुना तो मेरा वो सम्प्रेषण बहुत ही स्ट्रॉन्ग हुआ है। यहां जो भी बताया गया वो बहुत ही स्मूथली मेरे अंदर समाती गईं। ऐसे वातावरण में मुझे बहुत ही सुखद अनुभूति हुई है।

प्रश्न: ये परमात्मा का कार्य है और परमात्मा ने इस कार्य को आगे बढ़ाकर भारत को पुन: हमारी जो सनातन संस्कृति थी, जहां सभी सुख, शान्ति, चैन से रहते थे और सृष्टि चक्र की बात यहां कही जा रही है, तो आपका इस संदर्भ में क्या विचार है?

उत्तर: ये परमात्मा का कार्य है, इसमें कोई दो मतें नहीं हो सकती, मगर इसके सिस्टम के क्या पार्ट हैं, इसके बारे में और अधिक जानने का प्रयास कर रहा हूँ तभी मैं इसके बारे में कुछ कह सकता हूँ।

बड़ौदा-मंगलवाड़ी। ब्रह्माबाबा की स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. नट्टु भाई, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. राज बहन व ब्र.कु. मीना,यू.के.।

रजगामार-कोरबा(छ.ग.)। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. जितेश्वरी व बच्चे।

आणंद-सर्च लाईट। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' शिविर का उद्घाटन करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में एग्रीकल्चर रजिस्ट्रार मनोज ब्रह्मभट्ट, ज़ोन चेयरमैन लायन श्यामभाई साहू, प्रो. ई.वी. गिरीश, लायन प्रमुख राजूभाई, ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. गीता व अन्य।

दापोली-महा.। युवा सशक्तिकरण अभियान के समाप्ति समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए कोंकण कृषि विद्यापीठ के कुलगुरु डॉ. तपस भट्टाचार्य। मंचासीन हैं ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. शोभा व अन्य।

पाचोरा-महा.। निर्मला ताई तावरे हायस्कूल में डॉ अब्दुल कलाम स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. मीरा, प्रिन्सीपल अल्का बहन, ब्र.कु. नंदा, ब्र.कु. गीता बहन व अन्य।

राजकिशोर नगर-बिलासपुर(छ.ग.)। 'टच. द लाइट' सेवाओं के अंतर्गत होली नर्सरी स्कूल के विद्यार्थियों को 'ओम शांति सरोवर' भ्रमण व पिकनिक के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शिरोमणि, ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. राखी, ब्र.कु. प्रशांत, टीचर्स व अन्य।

मुंदरा-कच्छ(गुज.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में मुंदरा इंटरनेशनल कन्टेनर टर्मिनल के सी.ई.ओ. तेजस जी, एच.आर. मैनेजर गुरुपित जी, फिनान्स मैनेजर राजेश समदानी, ब्र.कु. सुशीला व अन्य।

मूल्यों की धारणा से ही सर्वांगीण समाज का विकास: फडणवीस

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय देवेन्द्र फडणवीस। सभा में उपस्थित हैं विश्व भर से हज़ारों ब्र.कु. भाई बहनें।

समाज के हर वर्ग में हो मूल्यों की पहल: दादी

शांतिवन। आज समाज में गिरते मूल्य आने वाली पीढ़ी और समाज के लिए चिंता का विषय है। उक्त विचार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने

- नवयुवक मुख्यमंत्री का ब्रह्माकुमारी संस्था में भव्य स्वागत
- आध्यात्मिक और गिरते नैतिक मूल्य समाज के लिए चिंता का विषय
- ब्रह्माकुमारी संस्थान का मूल्यों के प्रति प्रयास सराहनीय
- महिला सशक्तिकरण का अनुपम उदाहरण ब्रह्माकुमारीज़

शांतिवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में मूल्यों को आत्मसात करने की ज़रूरत है। ब्रह्माकुमारी संस्थान पूरे विश्व में जिस तरह मूल्यों के लिए प्रयास कर रहा है वह सराहनीय है। लोग केवल महिलाओं को आगे लाने की बात करते हैं परंतु केवल ब्रह्माकुमारी संस्था ही ऐसी संस्था है जिसके शीर्ष से लेकर नीचे तक महिलायें नेतृत्व कर रही हैं। इससे बड़ा महिला सशक्तिकरण और कुछ नहीं हो सकता। दादी से मिलने के बाद जो यहाँ ऊर्जा मिली वह कहीं नहीं मिली।

राजयोग ध्यान से सुखद शांति की अनुभूति – दादी

संस्था प्रमुख दादी जानकी ने कहा कि आज महिलाओं और परिवारों की सुरक्षा के पारिवारिक स्तर पर सभी को श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ सामग्री उपलब्ध करायी जाये। राजयोग ध्यान ही एक ऐसा माध्यम है जिससे जीवन में सुखद एवं शांति की अनुभूति की जा सकती है। संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने राजनीति में भी राजयोग ध्यान को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया।

ज्ञानचर्चा के पश्चात् दादियों के साथ देवेन्द्र फडणवीस।

कार्यक्रम में संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. रमेश शाह, महाराष्ट्र ज़ोन की निदेशिका ब्र.कु. संतोष, घाटकोपर ज़ोन की प्रभारी ब्र.कु. नलिनी समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये।

फडणवीस तथा राजस्थान के ऊर्जा मंत्री पुष्पेन्द्र सिंह राणावत ने काफी देर तक दादी से मुलाकात की। फडणवीस जी का परंपरागत रूप से स्वागत शांतिवन में पहुँचने पर हुआ।

100 वर्ष की दादी जानकी: पॉज़ीटिव सोच से रोज़ाना करती हैं 18 घंटे काम

शांतिवन। जिले के आबूरोड शहर में स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय संस्था के मुख्यालय का परिसर शांतिवन जहाँ की चारदीवारी में घुसते तो हज़ारों लोगों की मौजूदगी के बावजूद एकदम शांति और अनुशासन का अनोखा वातावरण देखने को मिलता है। देश दुनिया के करोड़ों लोगों ने इसके बारे में सुन रखा है। लाखों लोगों ने यहाँ आकर शांति, अध्यात्म और राजयोग को जाना व समझा है। यह शायद देश व दुनिया की पहली संस्था होगी जहाँ पूरे साल हर समय कम से कम 3 से 5 हज़ार लोग मौजूद रहते ही हैं। विशेष अवसरों पर तो यह संख्या 25 से 30 हज़ार होती है। कभी-कभी इससे भी अधिक।

140 देशों में फैली इस संस्था और इन सभी लोगों के आने जाने से लेकर रहने, भोजन, अध्यात्म सीखने और जीवन बदलने का काम करती हैं दादी जानकी। 100 साल की दादी जानकी इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं और इस उम्र में भी वे रोज़ाना 18 घंटे काम करती हैं। देश दुनिया के कई लोगों से मिलती हैं, यात्राओं पर जाती हैं। हाल ही में उन्हें केन्द्र सरकार ने स्वच्छता अभियान का ब्रांड एंबेसडर बनाया है। यह सारे काम वे बखूबी पूरा कर रही हैं और इन सबके पीछे सबसे बड़ा कारण है सिर्फ पॉज़ीटिव सोच।

विश्व के 140 देशों में है संस्था का कार्य, दादी जानकी देखती हैं यह सारा काम, हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बनाया है स्वच्छ भारत अभियान का ब्रांड एंबेसडर

जानिए, पॉज़ीटिव सोच के साथ कैसे बदला जा सकता है जीवन

दिन में 18 घंटे काम

दादी जानकी सवेरे 3.30 बजे उठ जाती हैं। इसके बाद मेडिटेशन करती हैं। 4 बजे विश्व शांति के लिए सामूहिक राजयोग का अभ्यास करती हैं। सवेरे 5 बजे ईश्वरीय महावाक्य, मुरली का अध्ययन, 7 बजे प्रवचन कार्यक्रम में शामिल होती हैं। इसके बाद दोपहर 2 बजे तक वे विभिन्न कार्य पूरा करती हैं। दोपहर में कुछ देर आराम के बाद शाम को वापस वे अपना काम शुरु करती हैं। रात्रि 11 बजे उनका सोने का समय होता है।

देवेन्द्र फडणवीस के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु.निकुंज।

100 साल की पहली प्रशासिका

दादी जानकी विश्व में पहली ऐसी महिला हैं जो 100 वर्ष की उम्र में किसी संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं और सक्रिय रूप से संस्था का संचालन कर रही हैं। वे 2007 में इस संस्था की प्रशासिका बनी थीं। इनका जन्म 1 जनवरी 1916 को हैदराबाद सिंध में हुआ था। 16 वर्ष की उम्र में वे इस संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माबाबा के संपर्क में आईं। तब से आज तक इसी से जुड़ी हुई हैं और इसके सबसे बड़े पद पर आसीन हैं।

ऐसा है मुख्यालय

1. परिसर में एक साथ 25 से 30 हज़ार लोगों के रहने, खाने, पीने के इंतज़ाम हैं।
2. यहाँ स्थित डायमंड हॉल में एक साथ 20 हज़ार लोग बैठ सकते हैं और विश्व की 18 भाषाओं में भाषण या प्रवचन सुन सकते हैं।

दादी जानकी के दीर्घायु होने के 3 सिद्धान्त

पॉज़ीटिव सोच

दादी जानकी के जीवन में पॉज़ीटिव सोच ही सबसे महत्वपूर्ण है। उनका कहना है कि जीवन में शत प्रतिशत पॉज़ीटिव सोच ही होनी चाहिए। यह हमें हर बुराई और हर बीमारी से दूर रखती है।

सत्य बोलो

दादी जानकी बताती हैं कि उन्होंने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला। इससे आत्मविश्वास तो बढ़ता ही है साथ ही मन को शक्ति भी मिलती है और वह किसी काम से पीछे नहीं हटता।

ईश्वर से जुड़ो

ईश्वर से जुड़ाव हर समस्या को समाप्त कर देता है। किसी जाति, धर्म में भेदभाव किए बिना इंसान व इंसानियत को समझो और उससे प्यार करो। खुद को आत्मकेन्द्रित करो। इससे परम आनंद की प्राप्ति होगी।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th Feb 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।